वो आख़िरी गंध

एक वफ़ादार साथी की अनकही दास्तान

डॉ. दीपक पंचोली

authordeepakpancholi@gmail.com

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Dr. Deepak Pancholi 2025

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7139-474-1

Cover design: Daksh
Typesetting: Tanya Raj Upadhyay

First Edition: August 2025

समर्पण

मेरे प्यारे पापा श्री बालकृष्ण शर्मा को जिन्होंने मेरी ऊँगली में कलम थमा कर साहित्य की महान और सुंदर दुनिया से प्रथम परिचय कराया। साथ ही दुनिया के उन तमाम निरीह प्राणियों को समर्पित जिन्हें लगता है कि वह बेसहारा है मगर सर्वशक्तिमान ईश्वर उनका और हम सभी का सहारा है।

भूमिका

सन 1992 –93 में जब मैं 12वीं कक्षा में पढ़ता था तब लंबे जुकाम के बाद मेरी सूंघने की शक्ति धीरे–धीरे समाप्त हो गई । एक इंसान के लिए सूंघने की शक्ति महत्वपूर्ण तो है मगर अपरिहार्य, वांछनीय नहीं है। मैं पिछले 30 सालों से इसके बिना भी काम चला रहा हूँ और कुछ मौको पर तो इसका फायदा भी मिला की भयंकर बदबूदार जगह पर भी मैं रह सकता हूँ, हालांकि नुकसान यह रहा कि अब मैं फूलों की महक, खाने की खुशबू यह सब शायद ही कभी महसूस कर पाऊं। सन 2000 के लगभग मेरे दिमाग में एक विचार अचानक कौंधा कि एक इंसान तो नाक खराब होने के बाद भी जिंदा रह सकता है मगर जिस प्राणी का तो सब कुछ ही नाक पर निर्भर है उसका क्या ? उसी पल मेरे दिमाग में पुलिस के खोजी कुत्ते 'रुचू' का विचार आया । राजस्थान के मेवाड़ अंचल में रुचू का मतलब कुत्ते का प्यार पिल्ला होता है। उसी दौरान मैंने 'रुचू' की कहानी लिखना प्रारंभ किया मगर आलस्य और अन्य कई कारणों से मैं इसे पूरी नहीं कर पाया। उसके बाद 2024 में जब मैंने यह आइडिया पत्नी सुमन ,बेटे हर्ष और बेटी मूमल को बताया तो उन्होंने सुझाव दिया की कहानी को विस्तार देकर उपन्यास का रूप दिया जाए। उसी

दौरान मेरे वरिष्ठ साथी अंग्रेजी के सेवानिवृत प्रोफेसर डॉक्टर खुशवंत सिंह कंग ने मेरी कुछ रचनाओं को अंग्रेजी में अनुदित करने का प्रस्ताव रखा तो मेरे मन में विचार आया कि 'रुचू' पर उपन्यास लिखूं और उसका अंग्रेजी में अनुवाद कराऊँ और आज इसका परिणाम आपके हाथों में है ।

वैसे तो मेरी पहली कहानी सातवीं कक्षा में ही प्रकाशित हो गई थी मगर मेरा पहला उपन्यास काफी देर से आया। इस उपन्यास को मूर्त रूप देने में चित्रकार अभय मुंशी का महत्वपूर्ण योगदान है जिन्होंने अद्‌भुत चित्रांकन से उपन्यास में चार चांद लगा दिए। मेरे इस महती सपने को साकार करने में मेरी कॉलेज साथी छोटी बहन प्रोफेसर भारती वीरवाल, प्रोफेसर अनिल चौंहाड़िया का भी काफी योगदान रहा, साथ ही असिस्टेंट प्रोफेसर ऋतु वर्मा का भी आभार जिसने मेरे आग्रह पर तीन चार बार प्रूफ्र रीडिंग का काम किया । पहली नजर में यह उपन्यास आपको बाल उपन्यास लग सकता है मगर यह उपन्यास 8 से 80 साल के पाठकों के लिए है और निसंदेह एक बार आप इसे पढ़ना प्रारंभ करेंगे तो आपके अंदर का बालक फिर से आपको आवाज लगाएगा, एक गहरे आत्मविश्वास के साथ। अगर ऐसा होता है तो एक लेखक के रूप में यह मेरे लिए सपना साकार होना होगा।

वो आखिरी गंध

दुनिया में कुछ ही प्राणी भाग्यशाली होते हैं, उनमें भी जानवर तो बहुत कम, और इन्हीं भाग्यवानों में से एक था रूचू कुत्ता। हालांकि रूचू कोई विदेशी नस्ल का कुत्ता नहीं था मगर उसकी नाक काफी तीव्र थी यानि सूंघने की शक्ति गजब थी और इसी खूबी के चलते वो शहर की पुलिस का पसंदीदा कुत्ता था।

पिछले दो सालों से रूचू शहर पुलिस के साथ काम कर रहा था और इस दौरान उसने अपनी सूंघने की शक्ति से कितने ही मामलों को सुलझाया। उसकी सूंघने की शक्ति से ईर्ष्या रखने वाले भी कम न थे, मसलन शेरू और जांबाज, यह दोनों रूचू के ही साथी कुत्ते थे ऊपर से विदेशी नस्ल के मगर रूचू के सामने इन दोनों की चमक फीकी थी।

जीवन हमेशा एक ही धारा में नहीं प्रवाहित होता, उतार–चढ़ाव जीवन के प्रमुख अंग होते हैं, चाहे वह हमारे जीवन में हो या फिर रूचू के।

उस दिन हल्की–हल्की सर्दी थी दोपहर के समय रूचू धूप सेक रहा था, शेरू और जांबाज दूसरे कोने में बैठे बाते कर रहे थे तभी रामदीन तेजी से चलता हुआ आया, रामदीन ही हमेशा रूचू को घटना स्थल पर ले जाता और फिर शुरू होता अपराधी की खोज खबर का सिलसिला। रूचू ने रामदीन को देखकर भांप लिया कि कोई घटना घटित हुई है अतः वो भी उठ खडा हुआ। रामदीन ने प्यार से उस पर हाथ फेरा,रूचू ने भी प्यार से रामदीन से लिपट कर जवाब दिया।

अगले आधे घंटे में रूचू घटना स्थल पर था, चारों तरफ सामान बिखरा पड़ा था, एक वृद्ध आदमी की लाश जमीन पर रखी थी लगता था मानो कुछ

देर पहले ही किसी ने उनकी हत्या की थी, खून भी काफी बह रहा था।

'रूचू सूंघो और पता लगाओ।' रामदीन बोला, और फिर शुरू हुआ रूचू का काम। पास में खडे सभी पुलिस वाले उसी पर निगाहे जमाए थे। रूचू ने लाश के कपडों को सूंघा और तुरंत खिड़की की तरफ देखकर भौंका, सूंघने की शक्ति ने उसे सुराग दे दिया, रूचू को पता चल गया कि अपराधी खिडकी के रास्ते भागा था।

अगले ही पल रूचू भी अपराधी की खोज में खिडकी से कूदा, पीछे–पीछे रामदीन और दूसरे पुलिस वाले थे।

शहर की पुरानी बस्ती की संकरी गलियों में रूचू और पुलिस वाले भागे जा रहे थे और यह सिलसिला कुछ देर बाद एक दो मंजिले मकान के सामने जा कर खत्म हुआ, पुलिस वालों ने समूचे मकान को घेर लिया, चार जने अंदर अपराधी को पकडने गए साथ में रूचू तो था ही।

बरामदे से सटे एक कमरे के बाहर रूचू रूक गया एवं तेज आवाज में भौंकने लगा यह संकेत था कि अपराधी इसी कमरे में छिपा है। तुरंत पुलिस वाले हरकत में आए, अचानक कमरा खुला, अंदर से तीन व्यक्ति हथियार लिए निकले, और फिर शुरू हुआ मुठभेड़ का सिलसिला। पुलिस वालों ने तुरंत दो को काबू में कर लिया मगर एक व्यक्ति भाग निकला, रूचू ने आव देखा न ताव और अपराधी के पीछे भागा, दरवाजे के बाहर पुलिस वाले खड़े थे अतः अपराधी पुनः अंदर की ओर भागा तभी रूचू ने उस पर हमला किया। अपने को छुड़ाने के लिए अपराधी ने रूचू पर चाकू से वार किया, पहला वार विफल हुआ मगर दूसरा वार उसकी नाक पर लगा, चोट तेज थी, नाक से खून आने लगा, रूचू घायल होकर नीचे जमीन पर लेट गया तब तक पुलिस वालों ने उस अपराधी को भी धर दबोचा।

रूचू को तुरंत पशु चिकित्सालय ले जाया गया। डॉक्टरों ने उसकी नाक की मरहम पट्टी की, इंजेक्शन भी लगाए। इलाज के बाद रामदीन रूचू को पुनः उसके रहने की जगह ले गया।

अगले दो दिन रूचू के लिए आराम के लिए थे, तबियत में सुधार हो रहा था मगर एक महान अनहोनी सामने आने वाली थी जिसका आभास किसी को न था।

उस दिन सुबह ही रामदीन आ गया, हमेशा की तरह रूचू रामदीन के साथ चल पड़ा। सेठ फकीरचंद की दुकान में चोरी हुई थी और रूचू को सूंघ कर पता लगाना था कि कौन अपराधी है ?

‘रूचू सूघों रामदीन की आवाज गूंजी। कितने ही अपराधियों को सलाखों में पहुंचाने वाले रूचू ने सूंघना शुरू किया मगर यह क्या, जो सूंघने की शक्ति रूचू के जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग थी वो रूचू से छिन चुकी थी। एक कुत्ते का जीवन, वो भी पुलिस के खोजी कुत्ते का, बिना सूंघने की शक्ति के शून्य होता है, ठीक उसी तरह जैसे बिना पंख के चिड़िया।

रामदीन और अन्य पुलिस वाले हैरान थे क्योंकि हमेशा तो रूचू तुरंत ही अपना काम शुरू कर देता मगर आज वो कुछ नहीं कर पा रहा था, निराश होकर रूचू रामदीन के पैरों से लिपटकर रोने लगा। किसी को समझ नहीं आया कि रूचू को क्या हो गया, इंस्पेक्टर ने रामदीन को रूचू को डॉक्टर के पास ले जाने का आदेश दिया और शेरू तथा जांबाज को बुलावा भेजा।

डॉक्टर दुर्बल सिंह ने रूचू का परीक्षण किया, उसकी नाक में उपकरण डाल कर देखा फिर बोले, 'बहुत दुःख की बात है रामदीन, अब रूचू कभी सूंघ नहीं पाएगा, पिछली चोट से इसकी नाक खराब हो गई है, अब यह पुलिस के काम का नहीं रहा।'

यह खबर रूचू के लिए जीते जी मरने जैसी थी, उसकी आंखों के सामने अंधेरा छा गया, यह उसके लिए जीवन की सबसे दुःखद खबर थी। रामदीन भी काफी दुःखी था, इतने दिनों साथ रहने से उनमें काफी प्यार हो गया था अब वो रूचू के भविष्य के प्रति आशंकित था क्योंकि बिना सूंघने की शक्ति के पुलिस रूचू को अपने साथ नहीं रखने वाली थी।

अगले दिन पुलिस के आला अधिकारी ने आदेश निकाल दिए कि रूचू को नगर निगम के हवाले कर

दिया जाए क्योंकि 'काम नहीं तो वेतन नहीं' का सिद्धांत सरकार ने पशुओं पर भी लागू कर दिया था।

रामदीन ने अफसर से काफी अनुनय–विनय किया मगर नतीजा कुछ नहीं निकला, उधर नगर निगम वाले भी रूचू को लेने के इच्छुक नहीं थे, रामदीन के पास अब दो विकल्प शेष थे या तो रूचू को अपने घर ले जाए या गलियों में भटकने को छोड़ दे। रामदीन ने पहला विकल्प अपनाया। अगले ही दिन रूचू रामदीन के घर में था। रामदीन के दोनों छोटे बच्चों ने रूचू का स्वागत किसी महानायक की तरह किया मगर अभी संकट टला नहीं था, रामदीन की पत्नी रूचू को देख बिफर पड़ी, ''घर का खर्चा तो बड़ी मुश्किल से चलता है और ऊपर से आप इस नामुराद कुत्ते को उठा लाए।''

''भाग्यवान ऐसा न कहो, रूचू बहुत प्यारा कुत्ता है, और इस पर कौन सा ज्यादा खर्च आएगा, सुबह–शाम जो रूखा–सूखा बचेगा खा लेगा बेचारा, वैसे भी अब इस दुनिया में इसका रहा कौन है ?

''मैं कुछ सुनना नहीं चाहती, इस घर में या तो मैं रहूँगी या फिर ये नामुराद कुत्ता, समझे।'' रामदीन की पत्नी का गुस्सा सातवें आसमान पर था, दरअसल बचपन में उसे किसी कुत्ते ने काट लिया था अतः तभी से वो कुत्तों से नफरत करने लगी थी।

आखिरकार वही हुआ जिसका डर था, रूचू जो कभी शाही ठाठ–बाठ से रहता था अब एक साधारण घर के किसी कोने में पड़ा रहने लायक भी नहीं रहा, इसे कहते हैं समय का फेर। रूचू के सामने अंधेरा छा गया, रामदीन ने रूंधे गले से रूचू को घर से निकल जाने का आदेश दिया यद्धपि बच्चों ने उसे घर पर ही रखने की जिद की मगर उनकी मां के आगे उनकी एक न चली।

शाम का समय था उस समय तक रूचू को भूख नहीं लगी थी, बस वो गलियों में इधर–उधर भटक रहा था। अब समय आ गया था जब उसे जमाने की कठोर सच्चाइयों से रूबरू होना था। विद्वान वैज्ञानिक डार्विन ने बरसों पहले कहा था ''दुनियां में वही जीवित रहता हे जो खुद को माहौल

के अनुसार ढ़ाल लेता है, साथ ही जीने के लिए संघर्ष करना पड़ता है।" मगर रूचू ने कब संघर्ष किया ? वो तो पैदा ही ऐशोआराम में हुआ था, उसे क्या पता था कि एक दिन उसे भी गलियों में आवारा घूमना पड़ेगा।

गुलाबी सर्दियों की शाम थी, सूरज अस्त होने लगा और थोडी ही देर में शहर को अंधेरे ने अपनी बाहों में समेट लिया। गली की रोड लाईट पक्षियों के घोंसले और कचरे की वजह से काफी कम प्रकाश दे रही थी।

रूचू इधर–उधर भटकता हुआ काफी थक गया था और उसने एक गली के नुक्कड पर सोने का इरादा किया मगर यह क्या ? वहॉ पहले से ही मौजूद तीन कुत्तों ने उसे देखते ही भौंकना शुरू कर दिया, वो अपने इलाके में किसी नए कुत्ते को हिस्सा नहीं देना चाहते थे।

एक पल को रूचू सोच में पड़ गया, ताकत में वो उन तीनों पर भारी पड़ने वाला था मगर उसने बेवजह लडाई का इरादा टाल दिया और बिना कुछ प्रतिक्रिया दिए लौटने का निश्चय किया।

गली से निकलते हुए वो सोच रहा था कि जिस गली, इलाके के लिए वो तीन कुत्ते उससे लड़ने को तैयार थे क्या वो इलाका हमेशा उनका

रहने वाला था ? उससे भी पहले सवाल उठता है कि क्या वो इलाका सच में उनका है ? जैसा रूचू आज से पहले खुद के बारे में सोचता था कि पुलिस मुख्यालय में उसका आलीशान इलाका था, मगर वो भ्रम में था क्योंकि एक झटके में उसे वहां से निकाल दिया गया था। कभी भी कोई दूसरी ताकतवर कुत्तों की गैंग या नगर पालिका की टीम उन तीन कुत्तों को भगा या पकड़ सकती है फिर यह बेवजह इलाके का भ्रम क्यों ? शायद ये कुत्ते भी इंसानों के साथ रह कर उनकी तरह स्वार्थी होने लगे हैं। रूचू के चेहरे पर हल्की मुस्कान उभर आयी वो दिन भर की पहली ओर आखिरी मुस्कान थी।

गली का एक किनारा मुख्य सड़क पर खत्म होता था, रूचू थके कदमों से मुख्य सड़क पर आ गया था। सड़क पर तेज रफ्तार कार सवार, मोटर साईकिल सवार घर जल्दी पहुंचने के उतावलेपन में भागे चले जा रहे थे मगर रूचू की रफ्तार कछुए की गति वाली सी थी क्योंकि फिलहाल उसका कोई आशियाना जो नहीं था।

सड़क पर पूरी तरह अंधेरा पसर गया था,एक ओवरब्रिज के नीचे किनारे पर लैम्पपोस्ट की हल्की रोशनी में एक साइकिल रिक्शा खड़ा था। रूचू धीमे कदमों से रिक्शे के बगल तक जा पहुंचा।

रिक्शे के दॉयीं ओर सड़क पर लैम्पपोस्ट के करीब एक सांड़ ऊँघ रहा था, रूचू ने उसके बगल वाली खाली जगह पर निगाह डाली। रात निकालने के लिए यह जगह थोडी कम असुविधाजनक थी, रूचू को याद नहीं आ रहा था कि वो कभी इस तरह सड़कों पर सोया हो, हमेशा चकाचौंध की जिंदगी जीने वाले रूचू को आज ऐसी गंदी जगह पर सोने के लिए भी संघर्ष करना पड़ रहा है, वक्त का क्रूर खेल ऐसा ही होता है।

रूचू महाशय ने जैसे ही सांड के बगल का रास्ता पार किया सांड ने गुस्से से सींग हिलाए और जता दिया कि वो वहां सोने की गुस्ताखी ना करे। रूचू ने सांड के सीगों को एक नजर देखा और पीछे हटने में ही अपनी भलाई समझी, समर्पण के भाव में उसके गले से हल्की भौंकने की आवाज निकली जिसने रिक्शे पर सो रहे गरीब बिहारी मजदूर की नींद में खलल डाला।

फटा सा बनियान और पेंट पहने मरियल से शरीर वाला सांवला सा बिहारी रिक्शेवाला थोडी देर पहले ही सपनों की दुनिया में पहुंचा था और रूचू के भौंकने की आवाज ने उसे गुस्सा दिला दिया। दिन भर यात्रियों, सड़क किनारे ट्रेफिक वालों की डांट–गालियॉ खाने वाले आदमी के अंदर का गुस्सा रूचू पर फूट पडा, उसने नींद में बिहारी भाषा में रूचू को एक गाली निकाली। गरीब आदमी ताकतवर लोगों का गुस्सा अपने से कमजोर आदमी पर निकालता है मगर वहां गुस्सा हमारे रूचू महाशय पर निकला।

रूचू समझ नहीं पा रहा था कि आज का दिन उसकी जिंदगी का सबसे मनहूस दिन कैसे बन गया, उसने वहां से भी दूर जाने में ही अपनी भलाई समझी।

थके कदमों से रूचू ने ओवरब्रिज की तरह रूख किया मगर कुछ कदम चलते ही उसे रिक्शेवाले के पुकारने की आवाज आयी।

नींद में खलल आने के बाद रिक्शेवाला पानी पीने के लिए उठा, अपने पास रखी बोतल से थोड़ा पानी पिया और फिर अचानक उसे रूचू पर दया आई और रात के बचे खाने की आधी रोटी निकाल कर रूचू का पुचकारा।

रूचू थोडी देर सोच में पडा वहीं खड़ा रहा, वो समझ नहीं पा रहा था कि दिन भर की दुत्कार के बाद यह बेसहारा, फटीचर सा रिक्शेवाला उसे प्यार से क्यों बुला रहा है ? मगर दिन भर की भूख उसकी सोच पर हावी हो गयीं

अगले पल रूचू रिक्शेवाले के बगल में जा पहुंचा और उसकी फेंकी आधी रोटी खाने लगा, रूचू की आंखों में आंसू थे मगर वो कर भी क्या सकता था ? अभी उसे जिंदगी के और कठिन पलों से गुजरना था और खुद को इस माहौल में जल्दी से जल्दी ढालने की तैयारी करनी थी।

रिक्शेवाले ने रूचू के सिर पर प्यार से हाथ फेरा और इशारे से रिक्शे के नीचे सोने की अनुमति दी। सांड यह सब घटनाक्रम देख रहा था मगर उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।

ओवरब्रिज से इक्का–दुक्का वाहन थोड़ी–थोड़ी देर में निकल रहे थे। सांड अपनी गर्दन नीचे झुका कर सो चुका था, दिन भर की मेहनत से थकाहारा रिक्शेवाला भी अगले पांच मिनट में खर्राटे लेने लगा, यह नींद ही ऐसी चीज है जो हर अमीर और गरीब को बिना किसी भेदभाव के एक अलग ही सुकून देती है, मगर हमारे रूचू की आंखों से नींद दूर–दूर तक गायब थी, भूख के मारे नींद नहीं आ रही थी मगर एक समय ऐसा आता है जब भूख और नींद की लडाई में भी नींद ही जीतती है, अगले एक घंटे बाद सड़क पर हमारा रूचू रिक्शेवाले और सांड के साथ नींद की बाहों में जा चुका था।

एक बार जब आप नींद की दुनियां में चले जाते हैं तो फिर महल झोंपड़ी या सड़क का फर्क मिट जाता है। हर जगह वही एक सुकुन वाला एहसास होता है मगर यह अहसास सूरज चाचा के आसमान में उदय होते ही गायब भी हो जाता है।

दूर पूरब में लालिमा उभर आयी, सड़क पर मामूली चहल–पहल शुरू हो गयी। मंदिर जाने वाले वृद्ध, महिलाओं की आवाजाही होने लगी, रिक्शे के बगल से एक अखबार वाला साइकिल की घंटी बजाता हुआ कुछ गुनगुनाता हुआ निकला और घंटी की आवाज ने हमारे रूचू की मीठी नींद तोड़ते हुए उसे एक बार फिर कठोर, बेरहम दुनिया से सामना करने के लिए जगा दिया।

रिक्शा वाला काफी पहले उठ चुका था उसे मुंह अंधेरे ही शौच क्रिया, स्नान आदि कार्यों को निपटाना होता है ताकि अलसुबह वो अपना और गांव में रह रहे बड़े परिवार का पेट भरने लायक पैसा कमा सके।

रूचू ने एक निगाह लैम्पपोस्ट के बगल में सो रहे सांड पर डाली मगर सांड वहां से जा चुका था।

रूचू अगर अपनी पुरानी जगह पर होता तो यह समय उसके दूध और बिस्किट खाने का होता था

मगर अब वो इन चीजों की कल्पना ही कर सकता था।

रूचू समझ नहीं पा रहा था कि अब वो आगे क्या करे ? कुछ देर ऐसे ही अलसाया सा रिक्शे के नीचे बैठा रहा तभी सफाइकर्मी के झाड़ू की फटकार से वो चौंक गया और रिक्शे के नीचे से बाहर आ गया। रूचू ने देखा कि सफाइकर्मी रिक्शा वाले पर चिल्ला रहा था, वो उसे वहां से रिक्शा हटाने की बोल रहा था।

थोडी देर की नोंक–झोंक के बाद रिक्शावाले ने रिक्शे को वहां से हटाया और उसी दौरान उसकी नजरे रूचू से मिली, एक अजीब सा लगाव रूचू ने उसकी आंखों में देखा और वो रिक्शावाले के पैर के पास खड़ा हो गया जैसे वो हमेशा रामदीन के पास खड़ा होता था।

रिक्शावाले ने रूचू के माथे पर हाथ फेरा और प्यार से पुचकारा, रूचू के दिन की यह एक अच्छी शुरूआत थी, हालांकि उसे अभी तक खाने को कुछ नहीं मिला मगर कम से कम इस कठोर अजनबी दुनिया में किसी का प्यार तो मिला।

सूरज अब पूरी मुस्तैदी से सड़क के ऊपर आ चुका था, शहर एक बार फिर दिन भर की उद्देश्यहीन मैराथन दौड़ के लिए तैयार हो चुका था,

ओवरब्रिज से वाहनों की कर्कश आवाजों ने रूचू को चेतावनी सी दी कि अब दिन भर की भागदौड़ के लिए तैयार हो जाओ। थोड़ी देर में ही ओवरब्रिज के नीचे भी लोगों की आवाजाही तेज हो गयी, रूचू को अब भूख लगने लगी थी उसने देखा कि थोडा आगे सड़क किनारे एक ठेले वाला चाय, पोहे और कुछ खाने पीने के सामान बेच रहा था।

पेट की भूख ने रूचू को ठेले वाले की तरफ धकेल दिया, ठेले के पास तीन–चार टूटी–फूटी कुर्सियों पर बैठे आदमी चाय पी रहे थे, एक मोटा आदमी सिगरेट फूंकता हुआ शहर के बढ़ते प्रदूषण पर अपनी चिंता व्यक्त कर रहा था। ठेले को घेरे हुए 5–7 व्यक्ति पोहे मांग रहे थे, रूचू ने अंदाजा लगा लिया कि ठेले वाला अच्छा नाश्ता बनाता है तभी ग्राहकों की भीड़ है। अगर उसकी नांक ठीक होती तो वो खुशबू से स्वादिष्ट नाश्ते का अहसास कर लेता मगर फिलहाल वो लाचार था।

भूख के मारे रूचू ठेले के थोडा करीब आया तो एक ग्राहक गुस्सा हुआ और ठेलेवाले से शिकायत की कि आवारा कुत्ते को यहां से भगाओ।

अगले ही पल ठेले वाले ने एक करारी लात रूचू के मारी, रूचू इसके लिए तैयार नहीं था, चोट से वो बिलबिला उठा । अब तक के जीवन में उसे याद नहीं आया कि किसी ने उसे ऐसे तिरस्कारपूर्वक लात मारी हो, वो चोट से कम अपमान से ज्यादा दुःखी हुआ और आंखों में निराशा लिए ठेले से दूर भागा तभी उसके कानों में एक बच्चे की आवाज सुनाई दी जो अपने पिता के साथ ठेले पर नाश्ता लेने आया था, ''देखो पापा ये कुत्ता कितना शानदार है, इसे हम अपने घर ले चले क्या ?'' यह सुन एक पल के लिए रूचू वहीं ठहर गया उसे लगा कि उसे एक बार फिर कोई घर मिलने वाला है, वो बच्चे की तरफ घूमा और प्यार से अपनी पूंछ हिलाने लगा मगर बच्चे के पिता ने बच्चे को डांटते हुए समझाया, ''बेटा ऐसे हम हर किसी गली के कुत्ते को घर नहीं ले जा सकते।'' रूचू के अच्छे भविष्य की इमारत नींव खुदने से पहले ही ढह गई, बेचारा अपना पक्ष भी उन बाप–बेटे के सामने नहीं रख सकता कि वो कोई आवारा गली का कुत्ता नहीं है, अगले ही पल उसके मन में ख्याल आया कि अगर वो किसी गली

का आवारा कुत्ता भी होता तो क्या उसके जीने का अधिकार समाप्त हो जाता ?

ईश्वर ने समस्त प्रकृति की रचना सोच समझ कर ही की होगी मगर यह नादान इंसान अपने स्वार्थ के तराजू पर ही हर चीज तौलते हैं। रूचू के चेहरे पर एक घृणा का भाव उभरा और वो बिना पीछे देखे वहां से निकल गया।

अगले दो घंटे रूचू बाकी आवारा कुत्तों की तरह उद्देश्यहीन इधर–उधर भटकता रहा। भूख ने उसका हाल बेहाल कर रखा था और जब वो किसी खाने–पीने की दुकान पर लोगों को कुछ खाता देखता तो उसकी भूख और बढ़ जाती ।

मुख्य सड़क पर काफी देर भटकने के बाद रूचू ने एक गली की तरफ रूख किया, छोटी गली में

दोनों तरफ मकानों के बाहर बड़े–बड़े रैम्प बने हुए थे। ''इंसानों का बस चले तो ये पूरी सड़क पर ही कब्जा कर ले। ''रूचू के दिमाग में यह ख्याल आया और एक हल्की मुस्कान चेहरे पर तैर गई।

गली के तीन–चार मकान पार करते ही रूचू को एक छोटी लड़की की आवाज सुनाई दी, वो ठंडी बासी रोटी बाहर फेंकने आई थी और रूचू को देख आवाज लगाई।

भूख ने रूचू के कदमों में तेजी ला दी, अगले ही पल वो छोटी बच्ची के करीब था। लड़की ने रूचू के पास आते ही ठंडी रोटी फेंक दी, उसे डर लगा कि कहीं वो उसे काट ना ले।

रूचू ने जमीन पर फेंकी गई रोटी को देखा उसे सूंघा मगर कोई गंध नहीं आयी, आती भी कहां से उसकी नाक तो खराब जो हो चुकी थी। अगले ही पल उसे अहसास हुआ कि उसकी नाक की शक्ति तो उसका साथ कभी का छोड़ चुकी थी और इसी कारण वो इस बदहाली की दशा में जी रहा है।

ठंडी रोटी का एक टुकड़ा मुँह में जाते ही रूचू ने वो टुकड़ा बाहर निकाल दिया, वो रोटी 8–10 दिन पुरानी थी उस पर फफूंद आ गयी थी। रूचू ने वो रोटी नहीं खाने का फैसला लिया और घर की

कंजूस मालकिन को मन में कोसता हुआ आगे निकल गया।

गली थोड़ी घुमावदार थी, पूरी गली का चक्कर लगाने के बाद भी हमारे रूचू को खाने को कुछ ना मिला तो उसे अहसास हुआ कि उसने वो बासी रोटी छोड़कर बड़ी गलती की, अब वो कोई महलों का कुत्ता नहीं रहा जो खाने के लिए नखरे दिखाए, अब समय आ गया था कि वो अपनी गली के कुत्तों वाली जिंदगी से ना केवल समझौता करे बल्कि उस माहौल में जल्दी से जल्दी ढल जाये।

उसके कदम फिर से उस मकान की तरफ हो लिए मगर घर के पास जैसे ही वो पहुंचा तो उसने देखा कि उस बासी रोटी को एक गाय अपना निवाला बना चुकी है, अब सिवाय अफसोस के रूचू के पास कोई दूसरा रास्ता ना रहा।

आसमान में सूरज अपनी पूरी अकड़ से मुस्करा रहा था, गली और मुख्य सड़क के कोने पर गली के पास थोड़ी छाया थी रूचू ने वहीं थोड़ी देर सुस्ताने की सोची।

एक हल्की सी नींद की झपकी रूचू को आ गयी थी मगर तभी एक पत्थर उसके सिर पर आ कर लगा तो वो दर्द से बिलबिला उठा।

दो स्कूल के बच्चे शैतानी करते हुए पत्थरों से रूचू पर निशाना साध रहे थे, स्कूल की छुट्टी के बाद ये बच्चे स्कूल में हुई अपनी पिटाई का बदला इस तरह से निकाल रहे थे।

रूचू को काफी गुस्सा आया और वो गुस्से से बच्चों की तरफ भागा, बच्चों को उम्मीद नहीं थी कि रूचू इस तरह हमला कर देगा। दोनों बच्चे घबरा कर भागे और हड़बड़ाहट में एक बच्चा नीचे गिर गया, यह देख वहॉ से गुजर रहे दो–तीन बड़े आदमी रूक गए और रूचू पर चिल्लाये।

''ये गली के आवारा कुत्ते आजकल काफी हमलावर हो गये हैं। ''

''नगर पालिका के कर्मचारी निकम्मे हैं, इन आवारा कुत्तों ने जीना हराम कर रखा है।''

दूसरे आदमी ने रूचू पर एक पत्थर फेंकते हुए कहा। पत्थर आता देख रूचू एकदम पलट गया और वहां से भागने में ही अपनी भलाई समझी।

रूचू समझ नहीं पा रहा था कि इंसान क्यों कभी अपनी गलती नहीं मानता, काश उसे मौका मिलता तो वो भी इंसान ही बनता।

अगली गली के मोड़ पर सामने से 3–4 बच्चे आते दिखायी दिये, स्कूल की छुट्टी होने पर बच्चों

के चेहरे पर जो खुशी होती है वो देखने लायक होती है।

''अरे रूचू''

''सच में ये तो हमारा रूचू है।''

सामने से आ रहे दो बच्चों की आवाज रूचू को सुनायी दी। रूचु के लिए यह सुनना काफी आनंद दायक था। इस कठोर, बेरहम दुनिया में कोई तो है जो उसे अपना कह रहा था।

बच्चे भाग कर रूचू के पास आए, रूचू उनमें से दो बच्चों को पहचान गया था। ये दो बच्चे रामदीन के बेटे रौनक और राहुल थे जो पुलिस लाईन में उससे कभी कभार मिलने आते थे।

रामदीन के बेटों ने रूचू के सिर पर प्यार से हाथ फेरा तो रूचू उनके पैरों में लिपट गया, बाकी दो बच्चे यह देख काफी प्रभावित हुए उन्होंने भी डरते–डरते रूचू के माथे पर हाथ फेरा।

''पता है इसे हम घर पर रखने वाले थे मगर मेरी मम्मी नहीं मानी।'' रामदीन का बड़ा बेटा अपने दोस्तों को रूचू के बारे में बता रहा था। ''हमारी मम्मी को भी कुत्ता पसंद नहीं यार '' निराश स्वर में दोस्त ने जवाब दिया।

तभी रामदीन के छोटे बेटे ने अपना स्कूल बैग खोला, टिफिन में से आधी बची रोटी और थोड़ी सब्जी रूचू के सामने रख दी। रूचू ने आव देखा ना ताव एक ही झटके में रोटी खत्म कर दी।

बच्चों को समझ आ गया कि रूचू भूखा है साथ ही उन्हें यह भी समझ आ गया कि अपना बचा हुआ टिफिन का खाना रूचू को देने से घर पर मम्मी की डांट से भी बचा जा सकता है और रूचू से तो दोस्ती मजबूत होगी ही।

सभी बच्चों ने अपना बचा हुआ खाना रूचू के हवाले किया, रूचू के लिए यह काफी आनंददायक पल था। गली के दो दूसरे कुत्ते भी तब तक वहां आ गए थे मगर बच्चों ने ही उन्हें भगा दिया, रूचू का पेट काफी भरने लायक स्थिति में आ गया था अब वो जिंदगी के संघर्ष के लिए तैयार हो चुका था।

अगले कुछ मिनटों तक बच्चे रूचू को सहलाते रहे, दूर किसी मकान से किसी बच्चे की मॉ की पुकारने की आवाज सुन सभी बच्चों को ध्यान आया कि अगर वो समय पर घर ना पहुंचे तो पिटाई की संभावना बन जायेगी, और बच्चे स्कूल की पिटाई के बाद घर की पिटाई खाना पसंद नहीं करने वाले थे तो रूचू को टाटा बोलते हुए घर की तरफ चल दिए।

थोड़ी देर रूचू अकेला खड़ा सुस्ताता रहा तभी गली के कुत्ते फिर इलाके पर हक जताते हुए भौंकते हुए आए। रूचू फिलहाल किसी लड़ाई के मूड में नहीं था तो चुपचाप मुख्य सड़क की तरफ चल दिया।

सड़क पर ट्रेफिक जाम सा लग रहा था, शायद कोई दो मोटर साइकिल सवार आपस में टकरा गये थे और झगड़ रहे थे बाकी भीड़ झगड़ा देखने में व्यस्त थी।

रूचू एक किनारे पर खड़ा हो मानवीय व्यवहार का निरीक्षण कर रहा था तभी पुलिस की गाड़ी का सायरन बजा, यह आवाज जानी–पहचानी थी। बरसों तक वो इस गाड़ी में शान से बैठ कर अपराधी पकड़ने जाता था। अगले ही पल गाड़ी सड़क पर रूकी, गाड़ी से तीन–चार पुलिसकर्मी उतर कर जाम हटाने लगे। रूचू ने एक निगाह गाड़ी में डाली। एक हवलदार बड़बड़ा रहा था––

''डकैती की जगह अब तक पहुंच जाते यदि ये जाम नहीं लगता।'' वायरलैस पर आवाजे गूंज रही थी तभी जीप के पिछले हिस्से में बैठे शेरू और जांबाज उसे दिखायी दिये।

रूचू को देख दोनों मुस्करा दिये, और पूरी अकड़ से अपना शरीर फैला लिया। वो दिखा रहे थे कि रूचू अब एक मामूली सा गली का कुत्ता है जबकि वो दोनों अब पुलिस के सर्वश्रेष्ठ कुत्ते बन चुके है।

रूचू के सामने हकीकत स्वीकारने के अलावा कोई चारा नहीं था। एक वक्त था जब रूचू भी उन दोनों को हेय दृष्टि से देखता था मगर इस दुनिया में जो सबसे ताकतवर चीज है वो है ''समय'' रूचू इस बात को आज अच्छी तरह समझ गया।

शर्मिंदगी और लाचारी भरी निगाहों से रूचू ने एक नजर फिर जीप पर डाली और वहां से जाने में ही अपनी भलाई समझी।

''अरे ये कुत्ता रूचू जैसा लगता है।''

'रूचू ही है ये।''

दोनों पुलिस वाले जाम हटा कर जीप की तरफ आते हुए आपस में बाते कर रहे थे।

'' बेचारा रूचू''

''इसे कुछ खाने को देते हैं।''

दूसरा पुलिस वाला बोला और रूचू को आवाज लगायी मगर रूचू के आत्मसम्मान ने आवाज अनसुनी कर दी और जल्दी ही वो उनकी नजरों से ओझल हो गया।

थोड़ा आगे चलकर रूचू एक गली में घुस गया, उसे यह डर था कि मुख्य सड़क पर अगर फिर से पुलिस वाली जीप से सामना हो जाए तो उसे एक बार फिर शेरू और जांबांज के सामने शर्मिन्दा ना होना पड़े।

रूचू एक खोजी कुत्ता रह चुका था, भले ही उसकी नाक खराब हो गयी हो उसमें बाकी काफी खूबियॉ ंतो थी ही। फिलहाल वो उस समूचे इलाके जिसमें रामदीन का घर, गली और आस–पास की 3–4 गलियां और मुख्य सड़क शामिल थे, का बारीकी से निरीक्षण कर रहा था क्योंकि जब तक

उसे अपना अगला स्थायी आसरा ना मिले वो इसी इलाके में कुछ दिन रहना चाह रहा था।

एक सीधी और सुनसान गली में चक्कर लगा कर वो दूसरी गली में घुसने ही वाला था कि सामने 3–4 मरियल कुत्तों का झुंड उसे देख चेतावनी देते हुए जोर से भौंकने लगा। उनके भौंकने की आवाज ने गली का सन्नाटा तोड़ा। दोपहर ढ़ल चुकी थी, घरों में बच्चे–महिलाएं सो रहे थे या फिर मोबाइल में व्यस्त थे, पुरूष नौकरी या काम–धंधों पर गये हुए थे।

रूचू शांत माहौल में आये इस व्यवधान के कारण गुस्सा हो गया साथ ही एक बार फिर इन गली के कुत्तों की ''इलाका नियंत्रण'' प्रवृति से नाराज होने के साथ उनकी बेवकूफी पर मुस्कुरा भी दिया।

गली के कुत्तों में से एक जो उनका मुखिया लग रहा था थोड़ा आगे आया, अपनी पूंछ ऊँची उठा कर रूचू को वहां से जाने की चेतावनी के अंदाज में सधे कदमों से थोड़ा–थोड़ा आगे बढ़ रहा था।

रूचू अपनी जगह पर बिना कोई प्रतिक्रिया दिए मगर पूरी सतर्कता से वहीं मजबूती से खड़ा रहा, उसे पता था कि ये मरियल से चारों कुत्ते एक साथ मिलकर भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

गली के कुत्ते हैरान हो रहे थे, उनका मुखिया समझ नहीं पा रहा था कि इस स्थिति से कैसे निपटा जाये ? क्योंकि आमतौर पर ऐसी दशा में लड़ाई होती है और एक पक्ष दुम दबाकर भागता है मगर हमारा रूचू ना तो लड़ रहा था ना ही ड़र रहा था और सबसे मजे की बात वो पूंछ ऊंची करके डरा भी नहीं रहा था, केवल उन गली के कुत्तों का मजाक सा उड़ा रहा था।

मुखिया के पीछे खड़ा एक कुत्ता ज्यादा जोश में आया और भागता हुआ रूचू के एकदम नजदीक आ गया, चारों ने भौंकने की गति बढ़ा दी अब रूचू को लगा कि कहीं उनके भौंकने से मोहल्ले वाले ना आ जाये ऐसा होने पर उन सभी को भागना होगा।

रूचू ने अपना शरीर चौडा़ किया, एक कदम पीछे ले कर हमले की पोजीशन बनाई और अपना पूरा मुँह खोला। बस इतना सा करते ही जोशीले कुत्ते की सिट्टी–पिट्टी गुम हो गयी और वो दुम दबाकर अपने मुखिया के पीछे खडा हो गया।

अगले कुछ सेकंड में ही इस युद्ध का अंत हो गया, चारों मरियल कुत्तों ने थोड़ा पीछे हटने में ही अपनी भलाई समझी। रूचू का उस गली पर या किसी ओर भी जगह पर अपना इलाका बनाने का कोई इरादा नहीं था और ना ही वो उन मरियल

कुत्तों को वहां से भगाना चाहता था इसलिए वो उन्हें चेतावनी के अंदाज में गुर्राते हुए वहां से एक विजेता की तरह पूंछ ऊंची किए निकल लिया।

गली के चारो मरियल कुत्ते हतप्रभ थे, उन्हें समझ नहीं आया कि लड़ाई जीतने के बाद भी क्यों रूचू वहां से चला गया ? असमंजस की स्थिति में चारों दुम दबाकर गली के कोने में बिदक कर बैठ गए और जाते हुए रूचू की शाही चाल को अपलक देखते रहे।

शाम ढ़लने को आयी, आसमान में सूरज चाचा अलसाये से पश्चिम दिशा की ओर जाने का मन बना रहे थे, घरों से बच्चों के बाहर गली–मोहल्ले, मैदान में खेलने का समय हो रहा था। कमबख्त मोबाईल के कारण गली में उछल–कूद करने वाले बच्चों की

संख्या काफी कम रह गयी थी फिर भी गली में कुछ बच्चे खेलने आ ही गये।

रूचू ने मरियल कुत्तों से अपना पहला युद्ध जीतने के बाद उद्देश्यहीन दो और गलियों के चक्कर काट लिए थे और थकहार कर रामदीन वाली गली के शुरूआती हिस्से में एक मकान की रैम्प के बगल में खड़ी कार के पास सुस्ताने का इरादा किया।

एक हल्की सी मीठी नींद की झपकी ने उसकी थकान दूर कर दी और तभी उसके कानों में कुछ जानी पहचानी आवाजे सुनाई दी।

''आज मैं पहले बेटिंग करूंगा, बैट मेरा जो है।''

रामदीन का बड़ा बेटा रौनक हाथ में क्रिकेट बैट लिए उत्साह से बोल रहा था।

''तेरे कहने का मतलब तू टॉस नहीं होने देगा?''

एक दूसरा बच्चा चेतावनी देना चाह रहा था मगर आवाज साथ नहीं दे रही थी क्योंकि वो भी मोहल्ले का नियम जानता था कि जिसका बैट होता है वो ही पहले बैटिंग करता है।

''भैया ठीक कह रहा है, पहली बैटिंग हमारी होगी।''

रामदीन का छोटा बेटा राहुल बड़े भाई के समर्थन में बोला, ''और हॉ मैं छोटा हूं तो भैया पहले मुझे बैटिंग करने देना प्लीज''

राहुल ने परिवार में छोटे होने का अपना ट्रंप कार्ड यहॉ भी आजमाना चाहा।

''ठीक है, अभी मैदान में तो चलो वहीं देखते हैं।'' बड़े भाई रौनक ने अपना अंतिम निर्णय सुनाया और एक बार फिर बैट को हवा में घुमाया।

''अरे ये तो रूचू है। ''

''अरे हॉ ये तो हमारा रूचू है, देखो दोस्तो।''

गली के मुहाने पर जब दोस्तों की टीम पहुंची तो किनारे सुस्ता रहे रूचू को देख दोनों भाई खुशी से उछल पड़े थे।

रूचू भी जानी–पहचानी आवाज सुनकर बच्चों के पास चला गया। उसे खुशी हो रही थी कि 4–5 घंटों में ही बच्चों से दोबारा मुलाकात हो गयी। रूचू प्यार से दुम हिलाता हुआ दोनों भाईयों के चारों ओर चक्कर लगा रहा था, बाकी बच्चे इस दृश्य को कौतूहल से देख रहे थे।

एक छोटे बच्चे ने डरते–डरते रूचू के हाथ लगाना चाहा मगर हिम्मत ना कर पाया।

''डरो मत ये हमारा रूचू है, काटेगा नहीं।'' राहुल बड़े अधिकार पूर्वक बोल रहा था।

अगले 5 मिनट में सभी बच्चों ने बारी–बारी से रूचू के माथे पर प्यार से हाथ फेरा और एक नयी दोस्ती, नए युग की शुरूआत की घोषणा हो गयी।

''आओ रूचू , मैदान में क्रिकेट खेलते हैं।''

रामदीन के बड़े बेटे रौनक ने रूचू को आदेश दिया और सारी टीम उत्साह से तेज कदमों से मैदान की ओर दौड़ चली, रूचू भी उनके पीछे–पीछे जा रहा था।

नगर पालिका का यह मैदान एक समय में काफी बड़ा था मगर धीरे–धीरे लोगों ने अतिक्रमण करके इसे काफी छोटा कर दिया। आज भी मैदान के एक कोने में भैंसे घास चर रही थी और बाकी मैदान में दूसरी गली के बच्चे और युवा क्रिकेट खेल रहे थे।

''यार हमारी तो किस्मत ही खराब है।''

मैदान में खेलने की कोई जगह ना बची देख एक बच्चा बोला।

बाकियों ने सहमति से सिर हिलाये मगर रौनक की निगाहों ने मैदान का एक खाली कोना खोज निकाला।

''दोस्तो हम उधर खेल सकते हैं, हॉ अगर वहाँ घास चर रही भैंसे भाग जाये तो हमें काफी जगह मिल जाएगी।''

बाकी बच्चों ने उम्मीद और खुशी से अपनी सहमति व्यक्त की।

''मगर भैया भैसों को भगाए कैसे ? ''

यह उसी तरह का सवाल था कि बिल्ली के गले में घंटी कौन बांधे ?

बच्चे कुछ सोचते उससे पहले हमारे रूचू ने मौके की नजाकत भांप ली और आज का हीरो साबित होने का अवसर देख भौंकते हुए भैंसों की तरफ भागा।

मस्ती से घास चर रही भैंसे एकदम से हट्टे–कट्टे कुत्ते को खतरनाक अंदाज में देखते हुए घबरा गयी और मैदान छोड़ भागने लगी।

दूर किनारे उन्हें चराने लाया एक युवक जो मुंह में गुटखा चबाते हुए मोबाईल में व्यस्त था, अचानक मची भगदड़ देख चौंका। उसने देखा कि उसकी भैंसे एक कुत्ते से डर कर भाग रही है तो गुस्से में कुत्ते को डराने के लिए आगे बढ़ा मगर यह कुत्ता कोई आम कुत्ता नहीं था।

हमारा रूचू हर परिस्थिति में खुद को संभालने की ताकत रखता था, उसने खूंखार आतंकवादियों को धूल चटाई हुई थी उनके सामने ये गुटखा चबाता युवक किस खेत की मूली था।

रूचू ने भयानक अंदाज से अब युवक की तरह छलांग लगायी और अगले ही पल युवक के हाथ से मोबाइल छूटा और वो नीचे गिर गया मगर तुरंत उठ कर भैंसों के पीछे भाग लिया।

''अरे अंकल अपना मोबाइल तो लेते जाओ।''

रौनक ने जमीन से मोबाईल उठा कर जाते हुए युवक को आवाज लगाई।

खिसियाता हुआ युवक मोबाइल लेकर चलता बना, बच्चों ने खेल के लिए मैदान हासिल कर लिया और हमारा रूचू उन सबके बीच हीरो के रूप में स्थापित हो गया।

''कमाल का है यार तुम्हारा रूचू।''

''तो तू क्या हमारी बातों को हल्के में ले रहा था।''

''मेरे पापा ने ट्रेनिंग दी है इसे।''

राहुल रूचू को गले लगा कर बोल रहा था और रूचू खुशी से अपनी जबान बाहर निकाले उछल रहा था।

थोडी ही देर में मैदान का यह खाली हिस्सा बच्चों की चहचाहट से गूंज उठा। जैसा कि पहले से तय था, रामदीन के बेटों की टीम को बिना टॉस

किए बेटिंग मिल चुकी थी, छोटे शहरों में गली क्रिकेट का यह अघोषित सा नियम काफी सालों से चला आ रहा था।

रूचू मैदान के कोने में मुस्तैदी से खड़ा मानो फिल्डिंग कर रहा था और जब कभी गेंद उसकी तरफ आती तो वो तुरंत लपक कर गेंद को वापस गेंदबाज को दे कर आता।

एक छोटे बच्चे के हवा में घुमाये शॉट से गेंद उछलती हुई रूचू के पास आयी और उसने एक फुर्तीले खिलाड़ी की तरह हवा में ही गेंद मुँह में लपक ली।

''क्या शानदार कैच है यार। ''

मैदान तालियों से गूंज उठा, नजदीक खेल रही दूसरी टीम के बच्चों ने भी जब यह दृश्य देखा तो वो भी ताली बजाने से खुद को ना रोक पाये।

''गजब यार, ये कुत्ता तो जोरदार खिलाड़ी है।'' बगल में खेल रही टीम के एक बड़े लड़के ने टिप्पणी की। ''वैसे इसे कभी यहॉ नहीं देखा, किसका कुत्ता है ये ?'' लड़के ने रामदीन के बेटों से पूछा।

''भैया यह हमारा रूचू है।''

रौनक ने गर्व से अपना दावा ठोंका और रूचू सहमति दर्शाते हुए उसके पैरों के पास आ कर लिपटने लगा।

''कल से तुम लोग हमारे साथ खेल सकते हो बच्चो, और हॉ इसे भी साथ ले आना।'' बड़ा लड़का रूचू की तरह इशारा कर रहा था ।

''भैया इसका नाम रूचू है।''

राहुल भी अपनी अहमियत दिखाने के लिए बीच में बोला।

अब रूचू पूरे मैदान में खेल रहे बच्चों का हीरो बन चुका था, अनजाने बच्चे आ–आ कर रूचू के सिर पर हाथ लगा रहे थे। और रूचू खुद को किसी फिल्म स्टार सा समझ रहा था।

“यार अब अंधेरा होने वाला है, घर चलते हैं।” एक बच्चा आसमान में ढलते सूरज को देखते हुए बोला।

‘हां दोस्तो अब घर चलते हैं नही ंतो मम्मी यहां आ जाएगी।”

एक छोटा बच्चा चिंतित स्वर में बोला तो रौनक हंसने लगा।

“अरे डरपोक, इतना मत डरा कर।”

बड़े भाई रौनक की बात सुन छोटे भाई राहुल ने हैरानी से बड़े भाई की आंखों में झांका, उसने इशारे से समझाया कि हमारी मम्मी भी देर से घर आने पर यहीं मैदान में आ कर इसी बैट से धुनाई कर सकती है।

छोटे का इशारा बड़ा भाई समझ गया और तत्काल बात संभालते हुए बोला–

“चलो भाई आज काफी मजा आया, कल हम थोड़ा जल्दी आ कर पूरे मैदान में कब्जा जमायेंगे।”

सभी ने सहमति से अपनी गर्दन हिलायी और रूचू ने अपनी दुम समर्थन में हिलायी।

“अरे भैया रूचू को तुम क्या अपने घर ले जाओगे ?”

एक बच्चा रौनक से बोला, वो उनके पड़ोस में ही रहता था।

सवाल काफी गंभीर था क्योंकि रामदीन के दोनों बेटों को पता था कि ऐसा करना उनके तो क्या उनके पापा के बस में भी नहीं है।

''अभी घर तो चलो देखते हैं।''

कहने को तो रौनक ने कह दिया मगर घर जा कर क्या देख सकता है वो अच्छी तरह से जानता था।

खामोशी से सारे बच्चे मैदान से निकल कर अपनी गली–मोहल्ले की ओर चल दिए, पीछे–पीछे रूचू एक अनजान आशा लिए चल रहा था।

''अरे हिमांशु आज रात तुम रूचू को अपने गैराज में रख लेना यार। ''

रौनक ने साथ चल रहे एक बच्चे को सलाह दी।

''अरे ना–ना भैया मेरी मम्मी मुझे भी घर से निकाल देगी, उन्हें कुत्तों से सख्त नफरत है। घबराते हुए हिमांशु ने एक पल में ही प्रस्ताव खारिज कर दिया और रूचू का दिल एक बार फिर टूटने के कगार पर जा पहुंचा।

बारी–बारी से सारे बच्चों ने प्रस्ताव को अलग–अलग बेतुके तर्क दे कर खारिज किया और थोडी देर बाद गली में केवल रामदीन के दोनों बेटे और रूचू रह गए।

''रूचू आज तू कहीं जा कर सो जा, कल तेरा इंतजाम करते हैं।''

प्यार से रूचू का सिर सहलाते हुए रौनक बोला, मगर रूचू और वो दोनों जानते थे कि यह एक बहाना मात्र है वर्तमान समस्या को टालने का । रूचू धीमे कदमों से वहॉ से निकल गया, दोनों बच्चे बेमन से घर में प्रवेश कर गए।

गली में सन्नाटा पसर आया था, लैम्पपोस्ट की लाईट जल और बुझ रही थी और यह दृश्य किसी डरावनी हिन्दी फिल्म की तरह लग रहा था। बगल के मकान में से किसी के जोर–जोर से झगड़ने की आवाजे रूक–रूक कर आ रही थी, रूचू कुछ देर वहॉ खडा रहा मगर उसे वहां ज्यादा देर रूकना अच्छा नहीं लग रहा था तो उसने मुख्य सड़क की तरफ अपने लक्ष्यहीन कदम बढ़ाए।

मुख्य सड़क पर आते ही उसे कल रात वाले ओवरब्रिज ओर रिक्शावाले का ख्याल दिमाग में आया और मन में एक उम्मीद की किरण सी जाग उठी। थोड़ी ही देर में हमारा रूचू ओवरब्रिज के किनारे लैम्पपोस्ट के पास जा पहॅुचा।

रिक्शावाला रिक्शा में बैठकर खाना खा रहा था और दिनभर की थकान उतारते हुए कोई भोजपुरी गाना गुनगुना रहा था। रूचू ने चारों ओर देखा, आज वो बलिष्ठ सांड वहॉ नहीं था, रूचू ने चैन की सांस ली।

''ऐ ऐ, ले ले '' रूचू के कानों में बिहारी रिक्शावाले की आवाज सुनायी दी। इस आवाज में एक प्यार, स्नेह का आमंत्रण था। रूचू तेज कदमों से रिक्शा के करीब जा पहुंचा।

''कुछ खाएगा बचुआ''

रिक्शावाला रूचू से ऐसे पूछ रहा था मानो दोनों की बरसों से जान–पहचान हो। रूचू ने सहमति में अपनी दुम हिलायी, रिक्शावाला तब तक खाना खा चुका था। नगरपालिका द्वारा संचालित गरीबों के लिए केंटीन से रिक्शावाला खाना लाता था उसमें से एक रोटी और थोडी सब्जी बच गयी थी वो उसने रूचू के सामने पुराने अखबार के ऊपर रख दी और प्यार से रूचू के माथे पर हाथ फेरा।

'' तू खाले बचुआ, हम जरा हाथ धोकर आते हैं।'' थके कदमों से रिक्शावाला हाथ में पानी की बोतल लेकर लैम्पपोस्ट की तरफ हाथ धोने चल दिया।

भूखे रूचू ने वो एक रोटी और सब्जी काफी आनंद से खायी तभी ओवरब्रिज से गुजरती एक कार की खिड़की खुली और नीचे 3–4 रोटियॉ आ कर जमीन पर गिरी।

हमारे रूचू के लिए यह लॉटरी खुलने जैसा था, दौड़ कर उसने रोटियॉ कब्जे में ली और रिक्शा के पास आ कर खाने लगा।

उसे लगा कि रामदीन कभी–कभी ऊपरवाले की मेहरबानी की बात करता है, कही वो ऊपरवाला इस कार में ही तो बैठ कर नहीं घूमता।

रिक्शावाला रिक्शे पर पैर फैला कर लेटा था, कभी वो आसमान में झांकता कभी रूचू को देखता तब तक रूचू भी अपना पेट भर चुका था।

''तुझे पता है हमारे गांव में आसमान पूरा साफ रहता है, हजारों तारे टिमटिमाते हैं।''

रिक्शावाला दिनभर किसी से अपने दिल की बात नहीं कर पाता था, आज उसे रूचू से अपने दिल की बात कहने का मौका मिला।

आसमान की तरफ इशारा देख रूचू ने भी ऊपर देखा।

''अरे तू तो समझदार कुत्ता है यार।''

अपनी तारीफ सुन रूचू खुश हुआ और गर्दन हिला कर धन्यवाद ज्ञापित किया।

''यहॉ शहर में तो 2–4 तारे भी दिखना मुश्किल है।'' उदास आवाज से रिक्शावाला बोला।

''पर क्या करे भाई, कमाने के खातिर गॉव छोड़ कर शहर आना पड़ता है बाकी अपना परिवार कौन छोड़ना चाहता है।''

रिक्शावाले ने आसमान में झांका और थोड़ी देर चुप्पी छायी रही जिसे झींगुरों की आवाज ने तोड़ा।

''कभी मौका लगा तो तुझे भी अपने गांव ले जाऊंगा, मेरी छोटी बेटी तुझे देख काफी खुश होगी।''

अब बिहारी रिक्शावाला दिनभर की थकान के बाद गहरी नींद के सफर में जाने वाला था, खुले आसमान में हल्की ठंडक छाने लगी। माहौल में भोजपुरी लोकगीत के स्वर धीमी आवाज में गूंज रहे थे जो शायद कोई दर्द भरा गीत था।

अगले 10 मिनट में रिक्शावाला और रूचू दोनों थक–हार कर सो चुके थे, झींगुरों के गीत लगातार जारी थे, शायद वो रात की शिफ्ट में ही काम करते हैं।

चिड़ियों के चहचहाने से सवेरे 5 बजे रिक्शावाले की नींद खुल गयी और रूचू भी हमेशा से एक मुस्तैद कुत्ता रहा है तो वो भी तुरंत जाग गया।

रिक्शावाले ने एक गहरी अंगडाई ली और रिक्शे के नीचे झांकते हुए रूचू से कहा– ''भाई कभी–कभी लगता है ये रात जो है हम सब गरीब और अमीर को एक करती है, सबकी नींद एक जैसी होती है, वो सामने बंगले वालों की नींद हो या तेरी–मेरी नींद, सब एक जैसा ही आनंद महसूस करते हैं मगर ये जो दिन है ना ये गरीब–अमीर में बहुत भेद करता है भाई।''

रूचू एक अच्छे विद्यार्थी की तरह सुन रहा था भले ही यह सब बाते उसके सिर के ऊपर से जा रही थी।

''ये पेट भरने की दौड़, कमाने की होड़ ये सब दिन का काम है।''

''चल तू नहीं समझेगा,तेरा ठीक है तू एक कुत्ता है तेरे को गरीब–अमीर से क्या मतलब।''

रिक्शावाला जोर से हॅसा और मुँह धोकर दैनिक क्रिया के लिए निकल लिया।

रूचू रिक्शा के नीचे ही लेटा–लेटा सोच रहा था कि एक कुत्ते की भी अपनी समस्या होती है और वो काफी हद तक इंसानों जैसी ही होती है, मगर ये इंसान भी उसका दर्द नहीं समझ सकते। एक पल के लिए फिर रूचू को अपनी पुरानी जिंदगी याद आ गयी मगर वो इसे जल्दी से जल्दी भूलना चाहता था क्योंकि वो अच्छी यादे आज के कड़वे सच में और पीड़ा देने वाली थी।

अगले एक घंटे में रिक्शावाला तैयार हो कर काम–धंधे पर निकल लिया, रूचू को उम्मीद थी कि सुबह वो कुछ नाश्ता करेगा तो उसे भी कुछ हिस्सा मिल जायेगा मगर उसे पता नहीं था कि गरीब

रिक्शावाला नाश्ता करके अपनी बचत बर्बाद नहीं कर सकता।

थोड़ी देर ओवरब्रिज के नीचे चक्कर काटने के बाद रूचू ने मुख्य सड़क का रूख किया। आज वो नाश्ते वाले ठेले की तरफ नहीं जायेगा उसने तय कर लिया था। नाश्ते वाले ठेले के विपरीत दिशा में रूचू निकल लिया उसे पता था कि अब दिन भर उसे ऐसे ही इधर–उधर बेमतलब चक्कर लगाना है।

सड़क के एक कोने में एक नीम के पेड़ के नीचे एक वृद्ध आदमी कुछ पुराने जूते, हथोड़ी और कुछ सामान लेकर बैठा हुआ था। वो अभी कुछ देर पहले ही वहॉ आया था और आसपास के छोटे से इलाके को झाड़ू से साफ कर रहा था।

रूचू उसे दूर खड़ा देख रहा था, उसे एक बात विचित्र लगी कि वो वृद्ध आदमी बैठे–बैठे झाड़ू लगा रहा था, थोड़ी ही देर में उसे समझ आ गया कि उस आदमी के दोनों पैर कटे हुए थे और वो खड़ा होने या चलने–फिरने में बिलकुल असमर्थ था।

रूचू उसकी स्थिति देख एक पल के लिए अपने गम को भूल गया। उसने थोड़ी हिम्मत की और वो वृद्ध आदमी के थोड़ा और करीब चला गया।

रूचू को देख एक बार तो वृद्ध आदमी ने उसे भगाने की सोची मगर रूचू की आंखों में एक अजीब सी कशिश देख उसने अपना इरादा बदल लिया।

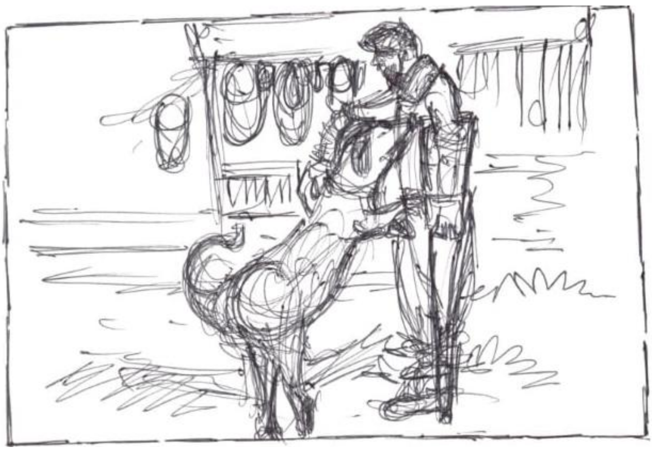

वृद्ध आदमी ने झाडू के इशारे से रूचू को नजदीक बुलाया और इंसानों की बोली, इशारे समझने में माहिर रूचू एक पल में ही समझ गया कि यह स्नेह निमंत्रण है ना कि दुत्कार का इशारा।

रूचू एक आज्ञाकारी बालक की तरह वृद्ध आदमी के पास खड़ा हो गया, वृद्ध आदमी की पारखी निगाहों ने देख लिया कि यह कोई आवारा कुत्ता नहीं, उसे लगा कि यह किसी पैसे वाले सेठ का कुत्ता है जो भटक कर आ गया। उसने इशारे से रूचू को एक कोने में बैठने का इशारा किया, कोने में पुराने जूतों का ढेर लगा था। रूचू समझ गया कि

यह वृद्ध आदमी एक मोची है जो जूते, चप्पल की मरम्मत करने का काम करता है।

अगले आधे घंटे में वो छोटी सी फुटपाथ पर लगने वाली दुकान अपने ढंग से सज चुकी थी, आम रास्ते पर लोगों की आवाजाही बढ़ चुकी थी। वृद्ध आदमी इस उम्मीद में था कि यदि कोई सेठ अपने पालतू कुत्ते को ढूँढते हुए आयेगा तो उसे यहॉ सुरक्षित पा कर कुछ इनाम देगा।

पिछले काफी समय से जब से शो रूम में जूते–चप्पल आने लगे तो वृद्ध आदमी की कमाई काफी ठप्प हो गयी, अब लोग जूते चप्पल खराब होने पर मरम्मत ना करा कर नये लेने लग गये तो उस जैसे कारीगर का धंधा मंदा होने लग गया। यह तो गॉव से आये गरीब लोगों के भरोसे उसका गुजारा चल रहा था जो अपने जूते–चप्पल कट–फट जाने पर भी उससे ठीक करवाने आ जाते, यह अलग बात है कि पैसे देते समय काफी झिकझिक करते, वे भी क्या करें बेचारे वे भी तो उस वृद्ध आदमी की तरह गरीब जो ठहरे।

‘‘ ऐ भैया मेरी चप्पल टूट गयी है, इसे ठीक कर दो।‘‘

एक प्रौढ़ उम्र का आदमी जो शायद कही मजदूरी के लिए जा रहा था, वृद्ध आदमी के सामने

खड़ा हो कर बोला। वृद्ध मोची ने उसे एक पल के लिए देखा फिर चप्पल पर निगाह डालते ही बोला– ''भैया 5 रूपए लगेंगे पहले ही बता देता हूं, बाद में झिकझिक मुझे पसंद नहीं। ''

''ठीक है, ठीक है, तुम जरा जल्दी ठीक कर दो।'' शायद वो प्रौढ़ आदमी काम पर जाने में जल्दी में था।

जैसे ही उसने अपनी चप्पल खोली रूचू ने तुरंत उसे मुँह में दबायी, प्रौढ़ एकदम से चौंका और मोची भी कुछ समझ पाता उससे पहले रूचू ने चप्पल उसके हाथों में थमा दी।

रूचू नहीं चाहता था कि वृद्ध विकलांग मोची घिसटता हुआ आये और प्रौढ़ आदमी से चप्पल ले, यह काम रूचू ने एक झटके में कर दिया।

'' अरे वाह आपका कुत्ता तो बड़ा होशियार है।''

''ये तो है। ''

वृद्ध मोची ने रूचू के सिर पर गर्व से हाथ फेरा, रूचू भी अपनी तारीफ समझ गया था।

थोड़ी देर बाद बच्चों की सड़क पर आवाजाही शुरू हो गयी, स्कूल खुलने का समय हो गया था। कुछ बच्चे साइकिल पर गुनगुनाते जा रहे थे,पीछे ही

4–5 बच्चे पैदल जोर–जोर से क्रिकेट मैच की बाते करते आ रहे थे। रूचू को ये सभी आवाजें जानी–पहचानी लग रही थी, वो समझ गया कि ये रामदीन के बच्चे और उसके दोस्तों की आवाज है।

रूचू फुटपाथ से उठा और आवाज की दिशा में दौड़ा, वृद्ध मोची अचानक हुई इस घटना पर कुछ प्रतिक्रिया नहीं दे पाया।

''अरे रूचू''

''हमारा प्यारा रूचू''

राहुल ने सबसे पहले रूचू को देखा फिर तो सभी बच्चों ने रूचू को घेर लिया, रूचू भी सुपर स्टार की भांति अपने फैंस से प्यार से दुम हिलाकर मिल रहा था।

''बच्चो यह तुम्हारा कुत्ता है क्या ?''

वृद्ध मोची ने जोर से बोला।

''अंकल यह कुत्ता नहीं हमारा रूचू है, हमारा हीरो है। ''

रौनक रूचू के सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए बोला।

''तो तुम इसे ले जा रहे हो क्या ?''

वृद्ध मोची की आवाज में उदासी थी।

सवाल सुन कर एक बार तो सभी बच्चों की बोलती बंद हो गयी, रौनक थोड़ा होशियार था।

''अंकल अभी तो हम स्कूल जा रहे हैं तब तक आप इसे अपने पास रख लो, वापसी में हम इसे ले जाएंगे।''

रौनक का यह प्रस्ताव वृद्ध को भी अच्छा लगा उसने सहमति से गर्दन हिलायी, बाकी बच्चे भी खुश हो गये।

''आ जाओ प्यारे रूचू महाशय''

वृद्ध मोची ने रूचू का एक बार फिर प्यार से स्वागत किया, रूचू खड़ा हो कर बच्चों को तब तक देखता रहा जब तक कि वो मुख्य सड़क से निकल कर स्कूल वाली गली में ना मुड़ गये।

अगले एक–दो घंटे रूचू के लिए काफी उबाऊ रहे, वृद्ध मोची के पास मात्र दो ग्राहक आये बाकी समय दोनों ही फुटपाथ पर बैठ कर सड़क पर होने वाली आवाजाही देख रहे थे।

कुछ देर बाद वृद्ध ने अपने खाने का टिफिन खोला और उसमें से एक रोटी निकाल कर रूचू को दी और फिर दोनों वहीं बैठ कर खाना खाने लगे।

खाने के अंत में वृद्ध मोची ने आधी रोटी बचायी, शायद उसने अपने हिस्से की बकाया भूख को दबा दिया और आधी रोटी रूचू को दे दी, क्योंकि उसे पता था कि एक रोटी से रूचू का पेट भरने वाला नहीं था।

रूचू ने एकबार तो अनिच्छा दिखायी मगर जल्द ही भूख उसकी अनिच्छा पर भारी हो गयी, रोटी खाते समय रूचू इंसानों के बारे में सोच रहा था कि भगवान ने इंसानों के व्यवहार में इतनी विविधता क्यों रखी ? कुछ तो बहुत ही भले हैं और कुछ बेहद दुष्ट, खैर भगवान की बात भगवान ही जाने।

रूचू ने रोटी का आखिरी टुकड़ा पेट के हवाले किया और एक बार फिर कृतज्ञता से वृद्ध मोची की तरफ देखा।

एक पल को उसे लगा कि उसकी और बृद्ध मोची की जिंदगी लगभग एक जैसी है। वो अपनी सबसे कीमती चीज नाक की शक्ति खराब होने से इस हालात में है और वृद्ध मोची अपने दोनों पैर ना होने से इस खराब दशा में है। मगर फिर भी उस वृद्ध मोची ने अपना हौंसला नहीं खोया, वो अभी भी संघर्ष करके जिंदगी की मुश्किलों को अंगूठा दिखा रहा है, उसके चेहरे पर कितनी प्यारी संतोष की मुस्कान है।

रूचू ने एक अंगडाई ली और तय कर लिया कि अब वो अपनी बेचारगी को दूर करके फिर से एक बार खुद को साबित करके दिखायेगा।

थोड़ी देर बाद जब कोई ग्राहक नहीं आता दिखा तो वृद्ध ने नींद की एक झपकी लेने की सोची, उसे सोता देख रूचू ने थोड़ा चहल–कदमी करने की सोची। उसने तय किया कि मुख्य सड़क से लगी 2–3 गलियों में चक्कर लगा लिया जाये, क्या पता खाने का कुछ और जुगाड़ हो जाये क्योंकि अभी भी भूख के मारे उसके पेट में चूहे दौड़ रहे थे।

एक अंगडाई लेकर उसने खुद को तैयार किया और धीमे कदमों से बिना आहट किये वहां से निकल गया।

एक कुत्ते की सूंघने की शक्ति, सुनने की शक्ति दिशा ज्ञान एक आम इंसान से ज्यादा होता है। हमारा रूचू भले ही नाक की शक्ति खो चुका हो बाकी शक्तियॉ उसके पास थी और खास बात यह थी कि वो पुलिस का खोजी कुत्ता रह चुका था और अच्छी खासी ट्रेनिंग हासिल कर रखी थीं। उसे पता था कि मुख्य सड़क और ओवरब्रिज के आसपास की 5—7 गलिया अब उसका नया ठिकाना बन चुका था।

रूचू ने एक गली की तरफ कदम बढ़ाये यह गली रामदीन के घर वाली थी, रूचू को पता था कि इस समय रामदीन के घर पर केवल उसकी पत्नी होगी क्योंकि बच्चे स्कूल गये थे और खुद रामदीन ड्यूटी पर होगा।

गली में इक्का—दुक्का आदमी दिखे, कहीं कोई खाने की चीज उसे नहीं दिखाई दी। गली के दायीं ओर वाला चौथा मकान रामदीन का था, बाहर उसकी पत्नी हाथ में रोटी लिए गाय को देने का इंतजार कर रही थी, रूचू की आशाभरी निगाहों ने रोटी देख प्यार से भौंका मगर यह देख रामदीन की पत्नी को गुस्सा आ गया और उसने बगल में रखा लकड़ी का डंडा उठाया। रूचू समझ गया कि यहॉ रोटी मिलना तो दूर की बात है फिलहाल डंडे की पिटाई के आसार हैं।

सामने से एक गाय और उसके पीछे वही सांड आता दिखा जो पहली रात को लैम्पपोस्ट के बगल में सो रहा था। रूचू ने इस गली से निकलने में ही अपनी भलाई समझी।

अगली गली में भी स्थिति लगभग पहले वाली थी, मगर एक मकान के बाहर एक ठंडी रोटी उसे दिख गयी, मकान मालिक ने शायद वो रोटी गाय के लिए फेंकी थी मगर गाय की नजर उस पर नहीं गयी होगी।

रूचू के पास ठंडी रोटी खाने के अलावा कोई विकल्प नहीं था, उसे इन गलियों में अपना अस्तित्व ही नहीं बचाना था बल्कि अपनी ताकत को भी बरकरार रखना था ताकि दूसरे कुत्ते उसे वहॉ से भगा ना दे।

अभी रूचू पूरी रोटी खत्म भी नहीं कर पाया कि उसके कानों में कुत्तो के भौंकने की आवाजे सुनायी दी। रूचू समझ गया कि पास वाली गली में कुत्तों के दो गुट आपस में लड़ रहे हैं, रूचू ने रोटी खत्म करके पास वाली गली में जाने का निर्णय लिया। जैसे इंसानों को इंसानों की लड़ाई देखने का चस्का होता है वैसे ही यह प्रवृत्ति कुत्तों में भी होती है।

पास वाली गली में घुसते ही रूचू ने देखा कि पिछले दिनों उसने जिन 3–4 कुत्तों की टीम को हराया था वो दूसरे 7–8 कुत्तों की टीम से अपने इलाके की रक्षा के लिए संघर्ष कर रहे थे। उस समय गली में कोई इंसान नहीं आ रहा था, रूचू एक पल के लिए एक कोने में खड़ा हो कर उनकी लड़ाइयॉ देखने में व्यस्त हो गया।

7–8 कुत्तों वाली टीम संख्या में तो ज्यादा थी ही ताकत में भी वो भारी लग रहे थे। उन्होंने एक मरियल कुत्ते को सड़क पर धूल चटा दी, बाकी कुत्ते दुम नीची करके लड़ने की कोशिश कर रहे थे।

रूचू की पैनी निगाहे यह सब देख रही थी मगर वो तय नहीं कर पा रहा था कि इस लड़ाई में वो सिर्फ दर्शक रहे या उसमें भाग ले ? तभी हारने वाली टीम का मुखिया दुम दबा कर उसकी तरफ आया, उसकी आंखों में बेचारगी थी और वो रूचू से

मदद की भीख मांग रहा था, दुश्मन टीम ने उसके कान पर जोर से काटा था जिससे खून भी आ रहा था।

रूचू के अंदर का एक योद्धा तुरंत जाग गया, पुलिस ट्रेनिंग में उसे सिखाया गया था कि जरूरत पड़ने पर कमजोरों की मदद करनी चाहिए।

रूचू एक पल के लिए यह भी भूल गया कि वो उस टीम की मदद करने की सोच रहा है जिसने कुछ दिनों पहले उसे धमकाया था।

रूचू ने तुरंत लड़ाई में हिस्सा लेने का निर्णय किया और जोरदार भौंकने की आवाज के साथ वो दुश्मन टीम के मुखिया की तरफ लपका।

सबसे पहले उसने एक झटके में सड़क पर नीचे गिरे मरियल कुत्ते को छुड़ाया फिर पंजों के एक वार से दुश्मन टीम के मुखिया को पीछे हटने पर मजबूर कर दिया।

अचानक हुए इस घटनाक्रम से दुश्मन टीम चौंक गयी उधर रूचू का साथ पा कर हारने वाले कुत्ते भी जोश में आ गये और रूचू के नेतृत्व में अगले 5 मिनट में ही उन्होंने युद्ध में विजय प्राप्त कर ली।

विरोधी टीम दुम दबा कर भाग गयी, रूचू ने अपने पैने, नुकीले दांतो की गुर्राहट से उन्हें बता दिया कि आगे इस तरह की हरकत वो ना करे।

हारते हुए अचानक जीतने वाले कुत्ते रूचू के चारों ओर नतमस्तक हो खड़े हो गये, उन्होने इशारों में जता दिया कि अब इस ग्रुप का टीम लीडर रूचू होगा, रूचू अपनी जीत पर खुश था मगर वो फिलहाल टीम या इलाके के चक्कर में नहीं पड़ना चाहता था, वो थोड़ी देर में जीत का आनंद लेने के बाद वहॉ से निकल गया, टीम उसे जाते हुए देखती रही।

रूचू और उसकी टीम ने इशारों में समझौता कर लिया कि रूचू जब भी जरूरत होगी उनकी

मदद करेगा, टीम तो रूचू को अपना लीडर, हीरो सब कुछ मान ही चुकी थी।

एक विजेता योद्धा की तरह अगले एक घंटे में रूचू आसपास की सभी गलियों में चक्कर लगा आया, रास्ते में उसे एक जगह छोटी बच्ची के द्वारा दी गई ताजा ब्रेड और कुछ बिस्किट भी खाने को मिल गये।

शान से गलियों का दौरा करके रूचू वापस वृद्ध मोची के पास आ गया था, तब तक उसकी नींद खुल चकी थी और वो एक महिला की टूटी सेण्डिल ठीक कर रहा था।

''आजकल की कंपनियॉ पुराने जमाने वाले मजबूत सेण्डिल नहीं बनाती है।''

महिला शिकायत के लहजे में वृद्ध मोची से अपनी बात कर रही थी।

''हा ये तो है। ''

वृद्ध मोची ने संक्षिप्त जवाब दिया।

रूचू को करीब आता देख महिला घबरा गयी। ''ये आवारा कुत्ते शहर में काफी हो गये हैं, भगाओ इसे ।

'' मैडम जी , घबराओ मत यह मेरा कुत्ता रूचू है, बड़ा समझदार है।

वृद्ध ने रूचू को अपने करीब बुला कर उसके माथे पर हाथ फेरा ।

''रूचू इस सेण्डिल को मैडम को दो।''

वृद्ध ने सैण्डिल ठीक करने के बाद रूचू की प्रतिभा प्रदर्शन दिखाने का फैसला किया। एक बार तो महिला घबरायी मगर जिस नजाकत और सावधानी से रूचू ने मुंह में दबा कर सैण्डिल महिला के पैरों के पास रखा उससे वो काफी प्रभावित हुई।

''अरे वाह यह तो हमारे टॉमी से भी ज्यादा होशियार है। '' रूचू अपनी तारीफ सुन खुश हो गया। महिला ने जाते–जाते अपने पर्स से एक बिस्किट का पैकेट निकाला और रूचू के हवाले

किया। रूचू के लिए यह इनाम किसी नोबल पुरूस्कार जीतने जैसा था।

अगले एक घंटे में रूचू ने थोडी देर नींद निकाली फिर सड़क पर आते–जाते लोगों, वाहनों को देखता रहा। दूर स्कूल की घंटी बजी जिसे रूचू ने सुन लिया, उसे काफी खुशी महसूस हुई क्योंकि अब उसका मस्ती टाइम शुरू होने वाला था।

स्कूल की छुट्टी के बाद वैसे भी बच्चों के चेहरों पर खुशियॉ रहती है और रूचू को देख उनकी खुशियां दुगुनी हो गयी।

''अरे प्यारे रूचू तू तो हमारा इंतजार कर रहा है।'' रौनक दौड़ कर आया और रूचू को सहलाया। रूचू ने अपने दोनों पैर ऊपर कर दिये और रौनक से लिपट गया, बाकी बच्चों ने भी चारों ओर घेरा बना लिया। सड़क से गुजर रहे कुछ लोग इस दृश्य को कौतूहल से देख रहे थे।

थोड़ी ही देर में बच्चों ने अपने टिफिन से बचा हुआ खाना निकाला और रूचू के हवाले कर दिया। आज बचा हुआ खाना कल की तुलना में ज्यादा था।

''पता है आज मैंने मम्मी से एक रोटी एक्स्ट्रा मांगी।''

अपना चश्मा ठीक करते हुए चिंटू बोला जो रौनक, राहुल का पडौसी था।

''मैंने बहाना बनाया कि आजकल भूख ज्यादा लगती है, तो मम्मी ने खुशी–खुशी एक रोटी ज्यादा रखी। अगर मैं रूचू का नाम लेता तो मम्मी एक रोटी कम कर देती।''

चिंटू अपनी होशियारी पर हंसा और बाकी बच्चे भी हंस दिये।

''ऐ चिंटू तू क्या समझता है यह आइडिया तेरे अकेले का है ?'' राहुल ने बीच में बात काटी – ''हमने भी एक रोटी एक्स्ट्रा वाला यही प्लान घर पर आजमाया, क्यों है ना भैया ?'' राहुल की बात का समर्थन रौनक ने गर्दन हिला कर कहा।

थोडी ही देर में हमारे रूचू महाशय ने भरपेट खाना खा लिया, अब उसके अंदर एक अलग ही ताजगी आ गयी थी।

''रूचू हम लोग घर जा रहे हैं, 1–2 घंटे बाद मैदान में क्रिकेट खेलने जायेंगे, तुम भी चलना।'' रौनक ने रूचू को समझाया और रूचू ने सिर हिलाकर सहमति व्यक्त करी।

अब अगले दो घंटे रूचू को फिर इंतजार करना था, रूचू ने तय किया कि बच्चों के साथ उनकी गली तक जाये और वही उनका इंतजार करेगा।

थोड़ी ही देर में सभी बच्चे अपने घरों में चले गये, रूचू ने सड़क किनारे एक बिजली के खम्बे के नीचे थोड़ी देर सुस्ताने की सोची।

रूचू गर्दन नीचे करके सोया ही था तभी एक पत्थर उसके पेट पर आ कर लगा, रूचू दर्द से बिलबिला उठा।

''इन आवारा कुत्तों ने पूरे मोहल्ले में आतंक मचा रखा है।'

एक मोटे से मुंह वाले आदमी ने पत्थर फेंकते हुए कहा , उसके साथ दो ओर आदमी थे।

'' कल ही पड़ोस वाली गली में एक आवारा कुत्ते ने एक छोटे बच्चे को काट खाया।

रूचू दर्द से बेहाल था और समझ नहीं पा रहा था कि किसी दूसरे कुत्ते की गलती की सजा उसे क्यों मिल रही है ? अगर इंसानों के साथ भी कोई ऐसा व्यवहार करे तो क्या होगा ?

“ ये नगर पालिका वाले कामचोर है, रोज कहते हैं आज कुत्ता पकड़ो अभियान चलायेंगे, मगर आते नहीं है। ”

तीसरे छोटे कद के गोल मटोल काले से आदमी ने अपनी टिप्पणी की।

रूचू तुरंत वहां से खिसक गया, वो जानता था कि यदि वो बदला लेगा तो नतीजा उसी के खिलाफ जायेगा क्योंकि इंसान कभी अपनी गलती नहीं मानते।

‘कल ही नगर पालिका चेयरमेन को बोलता हूँ इन सभी आवारा कुत्तों को पकड़ने के लिए। ’ रूचू ने जाते–जाते यह आवाज सुनी जो पत्थर फेंकने वाले आदमी की थी।

रूचू एक अनहोनी आशंका से सिहर उठा। रूचू बचपन से इंसानों के साथ रहा था तो उसे यह पता था कि बार–बार एक ही बात अगर दोहरायी जाती है तो फिर इंसान उस पर अमल भी कर लेते हैं, पिछले दिनों में उसने अलग–अलग इंसानों के मुँह से ‘कुत्ता पकड़ो अभियान’ के बारे में सुना था तो अब जल्दी ही ऐसा कुछ होने वाला है। रूचू एक बार फिर अपने भविष्य को लेकर आशंकित हो गया।

अभी दो दिन ही तो हुए थे कि रूचू ने खुद को इस माहौल में ढ़लने लायक बनाया, अगर उसे नगर पालिका के आदमियों द्वारा पकड़ लिया जाता है तो आगे की जिंदगी तो एक बेरहम कैदखाना जैसी हो जायेगी। रूचू इस आशंका से बेचैन हो कर गलियों में चक्कर काटने लगा।

वो संभावित खतरे से बचने की तैयारी में जुटा था, आखिर वो भी तो पुलिस ट्रेनिंग प्राप्त साहसी कुत्ता रहा है।

अगली गली में जब रूचू छिपने के किसी सुरक्षित जगह को तलाश रहा था तभी उसे उसकी

टीम के कुत्ते दिखायी दिये जो उसे देखते ही दुम दबाते हुए उसके पास आ कर दरबारियों की तरह खड़े हो गये।

'कितने मासूम हैं ये भोले–भाले गली के कुत्ते। '

रूचू उन्हें एक नजर देख कर सोच रहा था। रूचू कुछ पल वहाँ ठहरा और अपनी टीम को अपनी घबराहट लेशमात्र भी जाहिर नहीं होने दी और आगे चल दिया। एक अच्छा कप्तान कभी भी अपना डर टीम के सामने जाहिर नहीं होने देता है।

'कोई भी जानवर बेवजह दूसरों को परेशान नहीं करता मगर इंसान ऐसा करते हैं फिर भी वो जानवरों को आवारा कहते हैं।' रूचू मन में यह बात सोचते हुए फिर से वृद्ध मोची के पास आ गया जो अब अपनी दुकान समेटने की तैयारी कर रहा था।

वृद्ध मोची हर शाम अपना सामान समेट कर घर चला जाता था। रूचू कुछ सोच पाता तभी गली से बच्चों की खुशियों भरी आवाजे आती सुनायी दी। रूचू समझ गया कि यह समय पास वाले मैदान में क्रिकेट खेलने का होता है।

अगले ही पल वो अपनी सारी चिंताएँ छोड़ रौनक, राहुल, चिंटू और बाकी बच्चों के पीछे–पीछे उत्साह से मैदान की ओर चल दिया।

मैदान में रूचू का स्वागत बाकी बच्चों ने भी महानायक के रूप में किया। हमेशा तो मैदान में 3–4 अलग–अलग गुट अपनी–अपनी टीम बना कर खेलते थे मगर आज रूचू के कारण माहौल अलग था और सभी बच्चों ने एक साथ खेलने का फैसला किया।

रूचू को लेकर बच्चों के लिए सबसे अच्छी बात यह थी कि वो एक अच्छा फिल्डर था और उससे भी बड़ी बात कि वो ऐसा खिलाड़ी था जो कभी अपने लिए बेटिंग की मांग भी नहीं करता। बाकी तो कई बच्चे ऐसे भी होते हैं जो पहले बेटिंग करके फिल्डिंग करने से मना कर देते हैं और घर पर काम का बहाना बना कर गायब भी हो जाते।

लगभग दो घंटे के खेल के दौरान बच्चे और रूचू अपना सारा तनाव छोड़ कर खेलने में व्यस्त, मस्त थे।

‘ यार अब शाम ढलने आयी मैच बंद किया जाये तो ठीक रहेगा। ’

एक बडे बच्चे ने आसमान की तरफ देखते हुए कहा।

‘हॉ भैया सही बात है, नही ंतो थोड़ी देर में हमारी मम्मियों की फौज बेलन लेकर यहां आ धमकेगी।’

राहुल ने हंसते हुए अपनी बात रखी और पूरे मैदान में ठहाकों की आवाज गूंज उठी। अगले 10 मिनट में मैदान खाली हो गया, बच्चे अपने घरों की तरफ निकल लिए। रूचू भी उनके पीछे–पीछे चल दिया।

'यार मेरी मम्मी पापा को कह रही थी कि कल मोहल्ले में नगर पालिका वाले कुत्ते पकड़ने आ रहे हैं, क्या यह सच बात है ? '

एक बच्चे ने रौनक से पूछा।

'मेरे पापा भी इस बारे में अपने दोस्त से फोन पर कुछ बोल तो रहे थे।'

चिंटू ने बीच में ही अपनी बात रखी। इन सभी की बाते रूचू को परेशान करने वाली थी। वो अपनी सारी खुशी भूल कर अगले दिन की चिंता में डूब गया।

'' अरे भैया ऐसे तो कही वो लोग हमारे रूचू को ना पकड़ ले।''

एक बच्चे ने आशंका व्यक्त की।

'नहीं, नही ंहम ऐसा नहीं होने देंगे।'

रौनक ने अपनी बात रखी मगर उसकी आवाज में जोश और दमखम की कमी थी, जिसे रूचू ने आसानी से महसूस कर लिया।

अगले 10 मिनट में सभी बच्चे अपने–अपने घर की तरफ जा चुके थे। गली के मोड़ पर रौनक ने एक नजर रूचू पर डाली। रूचू समझ गया कि आज भी रौनक उसे हर कहीं सोने की बोल रहा है।

रूचू एक आज्ञाकारी बच्चे की तरह ओवरब्रिज की तरफ चल दिया। मैदान में बच्चों ने रूचू को काफी कुछ खिला दिया था। कोई उसके लिए बिस्किट लाया तो कोई रोटी, इस तरह रूचू का पेट भरा था।

रूचू ने तय किया कि आज भी वो ओवरब्रिज के नीचे रिक्शावाले के पास सोएगा।

लैम्पपोस्ट के पास आज वो बलशाली सांड खड़ा हुआ था, उसे देख एक पल तो रूचू घबराया मगर फिर हिम्मत करके उससे उचित दूरी बनाते हुए रिक्शा की तरफ कदम बढ़ाये। सांड ने आज किसी तरह की कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, वो अपनी मस्ती में ही व्यस्त था।

रिक्शा अपनी जगह पर खड़ा था मगर रिक्शावाला वहां नहीं दिख रहा था, रूचू ने एक

नजर चारों ओर दौड़ायी मगर रिक्शावाला नहीं दिखा तो वो चिंताग्रस्त हो गया।

अगर उसकी नाक ठीक होती तो वो सूंघ कर पता लगा लेता कि रिक्शावाला कहां है ? मगर फिलहाल वो ऐसा नहीं कर पा रहा था। तभी रूचू के दिमाग में एक बात आयी, 'अगर मेरी नाक ठीक होती तो मैं यहां क्यों आता ? और क्यों उस रिक्शावाले को ढूंढ रहा होता ?' सोच कर उसे हंसी आ गयी और साथ ही खुद की बेचारगी पर दया भी आ गयी मगर यही तो जीवन है, यदि हर चीज हमारे हाथ में होती तो फिर जीवन एकरस हो जाता और उबाऊ और नीरस बन जाता।

रूचू को लगा कि परिस्थितियॉ उसे ना केवल समझदार बना रही है बल्कि वो एक दार्शनिक भी बनता जा रहा है।

रिक्शा के बगल में बैठ कर रूचू इंतजार करने लगा, लैम्पपोस्ट वाले सांड की निगाहें बरबस उससे मिली। आज ना जाने किस मस्ती के मूड़ में है सांड, पर उसे छेड़ना खतरनाक है यह सोच कर रूचू ने निगाहें दूसरी तरफ की और तभी उसे दूर से रिक्शावाला आता दिखाई दिया।

'' अरे बबुआ तू आ गया। ''

बिहारी रिक्शावाला काफी खुश लग रहा था।

' इस बार गांव में फसल अच्छी हुई, उम्मीद है बनिये का कर्जा उतर जायेगा। घरवाली का फोन आया था। '

रिक्शावाला रूचू से ऐसे बात कर रहा था जैसे रूचू कोई इंसान हो और उसका कोई पुराना दोस्त हो। अगले आधे घंटे तक बातों का सिलसिला जारी रहा, रूचू एक समझदार श्रोता की तरह चुपचाप बाते सुन रहा था और बीच–बीच में अपनी गर्दन स्वीकृति में हिला देता, यह अलग बात है कि उसे ज्यादा कुछ समझ नहीं आ रहा था।

आसमान में चांद उग आया था साथ में कुछ सितारे चमक रहे थे, गुलाबी ठंड ने माहौल को शायराना बना दिया। सड़क पर शोर धीरे–धीरे कम होने लगा और बिहारी रिक्शावाला भोजपुरी गानों की तान छेड़ चुका था।

रूचू को नींद आने लगी, लैम्पपोस्ट वाला सांड मुस्तैदी से जुगाली कर रहा था और बिहारी रिक्शावाला गाना गाते–गाते बीच में रूक रहा था, थकान के कारण नींद उस पर हावी हो रही थी मगर वो आज मस्ती के मूड़ में था तो गाना गाए जा रहा था।

अचानक नजदीक ही 3–4 आदमियों की आवाजे सुनायी दी, वो बेतहाशा गालियॉ निकाले जा रहे थे, रूचू के चौकस कानों ने आवाज सुनते ही किसी खतरे का अलार्म दिया और रूचू तुरंत उठ खड़ा हुआ, सांड अपनी मस्ती में था तो रिक्शावाला थक हारकर सो चुका था।

'अबे ओ रिक्शावाले।'

एक मोटे से भद्दे आदमी ने रिक्शा को हिलाते हुए आवाज लगायी।

''जग्गु दादा के सामने तू सो रहा है, यह अपना इलाका है चल 100 रूपए निकाल।''

एक दूसरे आदमी ने रिक्शावाले के बाल खींचे, दूसरे हाथ में शराब की बोतल थी।

'भाई लोगो गरीब आदमी हूं , क्यों परेशान करते हो।'

रिक्शावाला गिड़गिड़ाते हुए बोला, नींद उसकी गायब हो चुकी थी।

'साले गरीब है इसलिए 100 रूपए मांग रहे हैं बाकी तो 1000 रूपए मांगते, चुपचाप निकाल रूपए।'

तीसरे आदमी ने रिक्शावाले को धक्का देते हुए कहा।

दुबला–पतला रिक्शावाला धक्के से नीचे जा गिरा। नीचे गिरते ही उसकी बेबस निगाहें रूचू से मिली। रूचू के अंदर का सिपाही अन्याय को देख जाग उठा, उसकी नाक ही तो खराब हुई थी ताकत तो अभी भी वही पुरानी थी।

अगले ही पल बिजली की गति से रूचू रिक्शा के नीचे से निकला और धक्का देने वाले बदमाश के सीने पर कूदा और उसके हाथ को काट खाया।

अचानक हुए हमले से वो आदमी घबरा गया और पीछे खिसका मगर संतुलन बिगड़ा तो नीचे जा गिरा। तब तक रूचू ने जग्गु दादा पर हमला बोल दिया वो उसे बोतल फेंक कर मारने लगा मगर बोतल उसी के आदमी के सिर पर लगी और खून की धारा बह चली।

चौथा आदमी घबरा कर लैम्पपोस्ट की तरफ भागा मगर वहां बैठे सांड ने अचानक उसे अपने सींगों से उठा कर दूर पटक दिया।

बाजी एकदम पलट गयी थी अब बिहारी रिक्शावाला जोश में था, उसने भी एक करारी लात जग्गु दादा के मारी। घबराया जग्गु दादा अपने साथियों के साथ भाग निकला, भागते हुए उसका पर्स वहीं गिर गया, रिक्शावाले ने पर्स हाथ में लेते हुए भोजपुरी की दो–चार गालियॉ बदमाशों को दी और युद्ध के विजयी अंत की घोषणा की।

'कमाल कर दिया बबुआ तूने, और नंदी बाबा तूने भी लाज रख ली।'

रिक्शावाला रूचू और सांड के प्रति भावविभोर हो गया।

'पर्स में 2–4 हजार रूपए हैं ये तुम दोनों के लिए रखूंगा।'

खुशी से झूमता हुआ रिक्शावाला राजा की तरह रिक्शा पर जा बैठा। अचानक वो नीचे उतरा और रूचू को गले लगा कर रोने लगा, आंसू भी प्रेम की भाषा होते है रूचू ने उस दिन यह महसूस किया। थोडी देर बाद रिक्शावाला सांड के पास गया और उसके माथे पर प्यार से सहलाया,सांड मस्ती में जुगाली कर रहा था और ना जाने किस धुन में मस्त था।

रात अंधेरी गहरा आयी और अगले आधे घंटे में तीनों नींद की दुनिया में खो गये, बस झिंगुर अपनी नाइट ड्यूटी पर थे।

अगर दिन अच्छा गुजरता है तो रात की नींद भी सुकून भरी होती है, हमारा रूचू किसी विजेता की तरह रात भर रिक्शा के नीचे सोता रहा, बाकी दो विजेता भी पूरी रात गहरी नींद में थे।

सुबह सूरज के उगने की आहट से पहले ही रिक्शावाला जाग चुका था और थोड़ी देर बाद रूचू भी नींद से जाग गया, उसने एक अंगडाई ली और दिन भर की दौड़भाग के लिए खुद को तैयार किया। रूचू ने एक नजर लैम्पपोस्ट पर डाली, सांड एक विजेता की नींद ले रहा था।

थोड़ी देर बाद ही रिक्शावाला आता दिखाई दिया, वो नहा धोकर तैयार भी हो चुका था साथ ही अपने हाथों में कुछ सामान लिए आ रहा था।

' ले बबुआ तेरे लिए बिस्किट लाया हूं।'

रिक्शावाला ने प्यार से रूचू के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा।

' ये लो नंदी बाबा आपके लिए भी चारा लाया हूं।'

घास का एक छोटा गट्ठर सांड के साामने रखते हुए रिक्शावाला बोला।

अगले ही कुछ देर में विजेता सेना के तीनों सदस्य सुबह का नाश्ता कर रहे थे। रिक्शावाला रिक्शे के ऊपर बैठ कर पोहे, चाय का आनंद ले रहा था और साथ ही भोजपुरी का कोई भजन गुनगुना रहा था जिसे रूचू और सांड सुन रहे थे।

थोड़ी ही देर बाद दो सफाइकर्मियों ने तीनों के आनंद को बाधित कर दिया।

' रिक्शा हटा बे।'

एक सफाईकर्मी ने अपना बड़ा सा लंबा झाडू सड़क पर घुमाते हुए आदेश दिया।

'पहले तुम लोग उधर का झाड़ू लगा आओ तब तक हम नाश्ता कर लेते हैं।' सड़क की दूसरी तरफ इशारा कते हुए रिक्शावाला बोला। आज बिहारी रिक्शावाले की आवाज में खनक थी।

'अबे ओ रिक्शावाले, ये सड़क तेरे बाप की है क्या ? चल हटा रिक्शा।'

'बबुआ जरा इसे तमीज सिखाना।'

सेनापति का आदेश पाते ही रूचू उग्र रूप धारण करके सफाइकर्मियों की तरफ लपका और डर के मारे दोनों बिना कोई विरोध किए दूसरी तरफ निकल गए।

' पता नहीं क्यों गरीब ही गरीब का दुश्मन क्यों होता है ?रिक्शावाला रूचू को देख कर उसकी राय

मांग रहा था, रूचू चुपचाप सुन रहा था। उधर सफाइकर्मी बड़बड़ाते हुए जा रहे थे।

'ये आवारा कुत्तों का तो नगर पालिका आज अच्छा इलाज कर देगी।'

'फिर कल देखते हैं इस रिक्शावाले को भी। '

दूसरे सफाइकर्मी ने पीछे देखते हुए बोला। रूचू के कानों में यह चेतावनी आ चुकी थी, उसे अनहोनी की आशंका ने घेर लिया।

कल दिन भर से तो वो अलग–अलग लोगों के मुंह से ''कुत्ता पकड़ो अभियान'' के बारे में सुन चुका था, अब उसकी रात वाली विजेता की खुशी गायब हो चुकी थी क्योंकि आज उसे फिर एक नये संघर्ष का सामना करना पड़ सकता है।

रिक्शावाला नगर पालिका के अभियान से बेखबर था और रूचू उसे समझा नहीं पा रहा था, उधर सांड को भी वो अपनी समस्या नहीं समझा सकता, कुल मिलाकर यह युद्ध उसे अकेले ही लड़ना था, उचानक उसे याद आया कि अब वो अकेला नहीं है बल्कि उसकी 4 दूसरे कुत्तों की टीम भी है जिसका वो लीडर है। और एक अच्छा लीडर पहले अपनी टीम की सुरक्षा के बारे में चिंता करता है।

अगले ही पल रूचू ओवरब्रिज को छोड़ अपने इलाके की तरफ चल दिया।

रामदीन वाली गली में उसे अपनी टीम नहीं दिखी तो वो पास वाली गली में गया। रूचू ने भौंक कर संदेश भेजा, इंसान भाषा के माध्यम से अपनी बात रखते हैं तो जानवरों के पास संदेश भेजने का अपना अलग तरीका होता है।

रूचू की आवाज सुन गली में इधर–उधर घूम रहे उसकी टीम के चारों कुत्ते उसके पास आ गये। रूचू एक कुशल नायक था जो जानता था कि डर के माहौल में टीम को हौंसला देने की जरूरत होती है ना कि डर को और बढ़ा–चढ़ा कर पेश करने की। रूचू ने अपनी टीम के सदस्यों को इशारा किया और वो चारों रूचू के पीछे–पीछे बिना कुछ सोचे चल दिये।

अगले आधे घंटे में रूचू ने इलाके की सभी गलियों को छान डाला, मुख्य सड़क पर पैनी निगाहों से छिपने की जगह खोजी तो साथ ही आने वाले खतरों की निशानी भी ढूढ़ने की कोशिश की। गलियों में घूमते हुए टीम के बाकी सदस्यों को लगा कि वो भोजन की तलाश में घूम रहे हैं मगर रूचू ने अपना इरादा जाहिर नहीं किया और इस दौरान जो भी

खाने को रोटी, बचा हुआ खाना फेंका हुआ मिला, टीम के सदस्यों को खाने का मौका दिया।

मुख्य सड़क पर वो आज भी कुछ देर वृद्ध विकलांग मोची के पास रूका, उसने उसे प्यार किया और खाने को दो रोटी और कुछ बिस्किट दिये। आज रूचू उस वृद्ध विकलांग मोची के पास ज्यादा देर नहीं रूका, उसके कानों ने एक ट्रेक्टर की आवाज सुनी और कुछ 'पकड़ो–पकड़ो' की आवाजे भी सुनी।

रूचू समझ गया कि नगर पालिका की कुत्ता पकड़ो टीम आज आखिरकार आ धमकी है, अब उसे अपना और पूरी टीम का मुस्तैदी से बचाव करना है।

रूचू ने फुर्ती से अपनी टीम को इशारा किया और एक गली की तरफ सरपट दौड़ लगायी।

'' अरे पकड़ो–पकड़ो ये 4–5 कुत्ते उधर भाग रहे हैं।''

ट्रेक्टर चला रहे आदमी ने रूचू की तरफ इशारा करते हुए अपने साथ आये आदमियों को बोला।

ट्रेक्टर से 4–5 आदमी बड़े–बड़े डंडे और पकड़ने के लिए बडी सी नेट लिए उतरे और गली की दिशा में भागे। ट्रेक्टर के पीछे के हिस्से में

पिंजरा रखा था जिसमें पहले से ही 10–15 कुत्तों को पकड़ कर रखा हुआ था जिन्हें उन लोगों ने सुबह से अब तक पकड़ा था।

रूचू ने पहले ही सोच लिया था कि यदि उन्हें पकड़ने आदमी आयेंगे तो उनके भागने और बच निकलने का रास्ता क्या होगा।

रूचू काफी फुर्तीला था मगर उसकी टीम के सदस्य उसके जैसे ना थे और ना ही वो खतरे से वाफिक थे मगर रूचू ने उन्हें छिपने वाली जगहों पर इशारे से भेज दिया। नगर पालिका के आदमी तेज–तेज आवाज किये भागे चले जा रहे थे।

यह गली रामदीन के घर वाली थी, तेज शोर की आवाज से बाकी महिलाओं के साथ रामदीन की पत्नी उषा भी बाहर निकल आयी थी।

‘चलो अच्छा है, निकम्मी नगर पालिका को कुछ तो सुध आयी।’

एक ही वाक्य में उषा ने तारीफ और बुराई को जोड़ दिया।

‘अरे कुछ नहीं भाभीजी, चुनाव आ रहे हैं इसलिए इन लोगों की नींद खुली है। ’

समने वाले मकान के दरवाजे पर खड़ी औरत ने अपनी विशेषज्ञ टिप्पणी रखी। बाकी औरतों ने भी अपने–अपने तरीके से सहमति व्यक्त की।

‘कमाल है यार, अभी तो कुत्ते इधर भाग कर आये और अब कहॉ गायब हो गये ?’ हैरान परेशान नगर पालिका का एक कर्मचारी चारों तरफ देखते हुए बोला।

रूचू अपनी टीम के साथ एक कार के नीचे छिपा हुआ था और कार को उसके मालिक ने कवर से ढक रखा था अतः रूचू को देख पाना संभव नहीं था। तभी टीम के सदस्य मरियल कुत्ते ने घबराहट से कवर के नीचे से बाहर की तरफ अपनी पूंछ निकाल दी।

'अरे वो कार के नीचे छिपा हुआ है एक कुत्ता।'

रामदीन की पत्नी उषा ने तेज आवाज में नगर पालिका के आदमियों को इशारा किया। रूचू को रामदीन की पत्नी और मरियल कुत्ते, दोनों पर गुस्सा आया मगर यह समय गुस्सा करने का नहीं था। उसने तुरंत वहां से निकलने का फैसला लिया और उसके साथ ही बाकी कुत्ते भी निकल कर भागे।

'पकड़ो–पकड़ो वो रहे।'

नगर पालिका का एक आदमी तेजी से रूचू की टीम की तरफ दौड़ा और पीछे रह गया मरियल कुत्ता उसके हाथ आ गया।

रूचू ने मरियल कुत्ते की पुकार सुन ली और तुरंत पीछे मुडा साथ ही बाकी टीम को भाग कर मैदान की तरफ जाने का इशारा किया।

नगर पालिका के आदमी ने कुत्ते को रस्सी से बांधना शुरू भी नहीं किया कि रूचू ने उस पर उछल कर आक्रामक हमला किया। रूचू चाहता तो उस आदमी को घायल कर सकता था मगर उसका इरादा केवल मरियल कुत्ते को बचाना था।

अगले ही पल रूचू मरियल कुत्ते को छुड़ा कर अपने साथ भगा ले गया और नगर पालिका के आदमी अचानक हुए इस हमले से चौंक से गये।

''कितने बदमाश कुत्ते हैं भाभीजी।''

रामदीन के पडौस वाली महिला ने उषा से कहा।

हॉ कुत्ते तो बदमाश ही होंगे ना, मगर इन लोगों को भी तैयार रहना चाहिए था ना।'

उषा ने नगर पालिका की टीम को लपेटे में लेते हुए टिप्पणी की।

थोडी ही देर में गली में तमाशा खत्म हो गया, नगर पालिका की टीम दूसरी गली में जा चुकी थी, उधर रूचू सुरक्षित तरीके से अपनी पूरी टीम को मैदान में ले आया। उसे पता था कि अभियान गलियों में ही चलेगा और अगर गलती से नगर पालिका वाले इधर आ भी गये तो उनके भागने के और छिपने के काफी रास्ते यहॉ हैं।

अगले दो घंटे तक रूचू ने अपनी टीम को मैदान में ही रोके रखा और जब उसे महसूस हुआ कि खतरा टल गया है तो मुख्य्य सड़क की तरफ चल दिया, टीम के बाकी सदस्य भी उसके पीछे–पीछे चल दिये।

मुख्य्य सड़क पर दूर से ही रूचू को नगर पालिका का ट्रेक्टर आता दिखाई दिया। रूचू ने अंदाजा लगा लिया कि ये ट्रेक्टर अपना अभियान पूरा

करके वापस जा रहा है। रूचू ने सड़क किनारे की झाडियों में छिपकर ट्रेक्टर को जाते हुए देखने का फैसला किया। बाकी सदस्य भी उसके पीछे झाडी में छिप गये। थोडी ही देर में ट्रेक्टर वहॉ से निकला और रूचू ने देखा कि पीछे पिंजरे में काफी कुत्तों को पकड़ कर डाला गया था।

अचानक रूचू ने देखा कि पिछले दिनों इलाके की लडाई के लिए आये कुत्तों की टीम के सारे सदस्य भी उस ट्रेक्टर में बंदी बना लिए गए थे। मरियल कुत्ते ने खुशी से हल्की भौंकने की आवाज निकाली, ट्रेक्टर में बंद विरोधी टीम के सदस्यों ने बेबसी से मरियल कुत्ते को देखा।

रूचू ने तुरंत मरियल कुत्ते को डांटा, रूचू ने समझाया कि एक कुत्ता हो कर दूसरे कुत्ते को अपना दुश्मन समझना मूर्खता है, इसी कमजोरी का फायदा

दूसरे जानवर उठाते हैं। फिर रूचू के दिमाग में प्रश्न उठा 'पता नहीं क्यों ऐसे ही इंसान भी इंसान का दुश्मन बन जाता है, जबकि भगवान ने हर एक प्राणी के लिए एक बेहतरीन फूड चेन बना कर जीने की व्यवस्था कर रखी है।

'कुछ बदमाश कुत्ते फिर भी हमारे हाथ नहीं आये।'

जाते हुए ट्रेक्टर में से किसी की आवाज रूचू को भी सुनायी दी।

'कोई बात नहीं, दो–चार दिन बाद फिर आयेंगे तब उनको भी पकड़ लेंगे, फिलहाल तो इन पकड़े गये कुत्तों को जंगल में छोड़ना है।

दूसरे आदमी की बात भी रूचू ने सुनी और राहत की सांस ली, फिलहाल का खतरा तो टल गया अब वो दो–चार दिन बिना डरे घूम सकते हैं। क्या जाने दो–चार दिन बाद फिर नगर पालिका वाले आना ही भूल जाये क्योंकि उसने रामदीन की पत्नी के मुंह से सुन रखा था कि नगर पालिका वाले कामचोर है।

फिलहाल तो अपनी जीत की खुशी मनाने का समय है, रूचू ने अपनी टीम के सदस्यों को इशारा किया कि अब वो अपनी मर्जी से घूम–फिर सकते हैं।

टीम के सदस्य छुट्टी मिलते ही एक गली की तरफ निकल गये जहॉ उन्हें हमेशा खाना मिलने की संभावना रहती है। सूरज आसमान के बीचों–बीच आ चुका था, गुलाबी सर्दियों के मौसम में यह धूप सुहानी सी लग रही थी।रूचू ने मुख्य सड़क पर अपने दिन के दोस्त वृद्ध विकलांग मोची के वहां जाने का फैसला किया।

वृद्ध मोची खाना खा कर टिफिन बंद कर ही रहा था कि रूचू को देख काफी खुश हुआ और फिर से टिफिन खोल कर बची हुई एक रोटी–सब्जी रूचू के हवाले की।

दिन की भागादौड़ी से हमारा रूचू थक चुका था और इतने प्यार से दिए खाने को मना कर ही नहीं सकता था।

घंटे भर बाद ही जब बच्चों के स्कूल की छुट्टी हुई तो रूचू भी उत्साह से भर गया।

'अरे वो रहा रूचू।'

राहुल ने बाकी बच्चों का ध्यान रूचू की तरफ खींचा।

'अरे वाह यह तो काफी अच्छा रहा। मैं भगवान से प्रार्थना कर ही रहा था कि नगर पालिका वालों के हाथ हमारा रूचू ना लग जाये।'

रौनक ने रूचू को गले लगाते हुए कहा। 'मेरे रहते कोई रूचू को कैसे ले जा सकता है ?'

वृद्ध मोची ने जोश से अपनी बात कही और सभी खुश हो गये।

थोडी ही देर में बच्चे गली में प्रवेश कर गये, उससे पहले उन्होंने रूचू को हमेशा की तरह भरपेट खाना खिलाया।

पिछले 2–3 दिनों से सभी बच्चों की मम्मियॉ इस बात पर खुश और हैरान दोनों ही थी कि उनके बच्चे अचानक इतने आज्ञाकारी कैसे हो गये कि टिफिन में रखा पूरा खाना खा कर आ जाते हैं। बच्चों ने भी रूचू वाला राज गुप्त ही रख रखा था।

'अरे ये कुत्ता कहॉ से आ गया, नगर पालिका वालों ने इसे कैसे छोड़ दिया।' घर के बाहर इंतजार कर रही उषा ने अपने बच्चों से गुस्से में कहा।

'मम्मी ये अपना रूचू है, पापा वाला कुत्ता।' रौनक ने सफाई दी मगर उषा गुस्से में थी, तभी गली से मोटर साइकिल से गुजर रहा व्यक्ति वहां रूका। वो उस इलाके का पार्षद था।

''भाभीजी नमस्कार, आपकी शिकायत पर आज हमने कुत्ता पकड़ो अभियान चला ही दिया।''

''अच्छा फिर ये सामने क्या शेर दिख रहा है आपको ?' रामदीन की पत्नी ने रूखी आवाज में रूचू की तरफ इशारा करते हुए बोला।

'अरे भाभीजी नाराज मत हो आप, दो–चार दिन में बचे हुए कुत्तों को पकड़ने फिर से हमारे आदमी आयेंगे। आप तो बस चुनाव में हमारा ध्यान रखना।'

खिसियानी हंसी हंसता हुआ आदमी हाथ जोड़कर बोला फिर रूचू की तरफ हिकारत भरी नजरों से देखते हुए मोटर साइकिल स्टार्ट कर निकल गया।

रूचू समझ गया कि संकट टला नहीं है, वो रामदीन की पत्नी का कुत्तों के प्रति नफरत का कारण भी समझ नहीं पा रहा था, कहॉ तो रामदीन उसका बेटे जैसा ख्याल रखता था और कहॉ ये औरत, जो उसे गली में भी चैन से नहीं रहने दे रही थी।

ईश्वर उसके जीवन में अभी और कितनी विविधता लायेंगे यह रूचू समझ नहीं पा रहा था। रौनक और राजीव ने बेबसी भरी निगाहों से रूचू को देखा और घर के अंदर चले गये, उनकी आंखों में रूचू के लिए शाम को मैदान में खेलने का भी आमंत्रण था।

शाम होने और बच्चों के खेलने के समय में अभी दो घंटे बाकी थे तो रूचू ने वापस इधर–उधर घूम कर वृद्ध विकलांग मोची के पास जाना तय किया।

रूचू गली से निकलने ही वाला था कि एक तेजी से आती मोटर साईकिल उससे टकराते–टकराते बची। रूचू सतर्क था और किनारे हट कर मोटर साइकिल सवार पर भौंका।

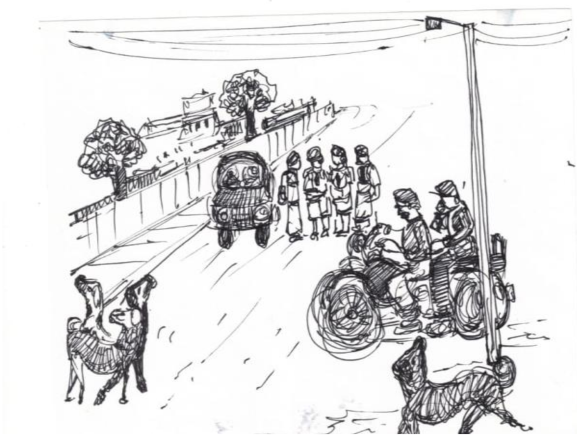

मोटर साइकिल पर दो आदमी थे, रूचू की पारखी निगाहों ने महसूस कर लिया कि ये दोनों आदमी अपराधी किस्म के हैं। यदि उसकी नाक सही होती तो क्या पता उसे याद आ जाता कभी उसने किसी अपराध की जांच के दैरान इन दोनों आदमियों की गंध सूंघ रखी हो।

रूचू कुछ सोचता उससे पहले ही दोनों मोटर साइकिल सवार चिंटू के मकान के बाहर एक पल को रूके, अंदर कुछ ताकाझांकी की और तुरंत वहां से तेज गति से रवाना हो गये, पीछे मोटर साइकिल का काला धुंआ छोड़ गये।

रूचू का दिमाग आशांकित हुआ, उसने आज तक ढेरों अपराधी पकड़े हैं और वो उन्हें देख कर ही अंदाजा लगा सकता है कि उनके इरादे सही है या नहीं ? कुछ देर रूचू वहॉ खडा रहा फिर चारों तरफ शांति देख मुख्य सड़क की तरफ वृद्ध विकलांग मोची के पास आ गया।

अगले दो घंटे वो वृद्ध मोची के पास ही बैठा रहा, आते–जाते ग्राहकों को अपनी प्रतिभा दिखाता रहा अगर उसका दिमाग अभी भी आशांकित था और अब आशंका , भय के दो कारण थे, पहला तो यह कि नगर पालिका वाले अपना अभियान वापस कब शुरू कर रहे हैं, दूसरा यह कि मोटर साइकिल पर आये दोनों आदमियों का इरादा क्या था ?

शाम को रौनक, राहुल, चिंटू और बाकी बच्चों के साथ रूचू भी मैदान में खेलने गया। बच्चे खेल का भरपूर आनंद ले रहे थे, साथ ही वो खुश थे कि कुत्ता पकड़ो अभियान से रूचू सुरक्षित बच गया। मगर रूचू मैदान में भी पूरी तरह मुस्तैद था, कही से

भी किसी वाहन, विशेषकर मोटर साइकिल की आवाज आती तो उसके कान चौकन्ने हो जाते। आज खेल से ज्यादा रूचू का ध्यान सुरक्षा पर था और इसी कारण खेल में उसका प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा। हमेशा वो अपनी तरफ डाली गयी गेंद को मुँह में लपक लेता मगर आज कई दफा उसकी गेंद नीचे गिर रही थी।

'लगता है आज रूचू थक गया है, या शायद बीमार हो।'

रौनक ने अंदाजा लगाया।

'इसे डॉ. अंकल को दिखाए क्या ?' चिंटू ने गेंद राहुल की तरफ उछालते हुए कहा।

'आज आज देखते हैं नहीं तो कल कुछ करते हैं।'

रौनक ने रूचू की तरफ देखते हुए कहा। रूचू सोच रहा था कि काश वो अपनी चिंता इन बच्चों को समझा पाता, मगर वो ऐसा करने की क्षमता रखता तो भी वो ऐसा नहीं करता क्योंकि वो एक सच्चा लीडर था जो अपने दोस्तों की रक्षा बिना उन्हें चितिंत किए करना जानता था।

खेल समाप्ति के बाद सभी बच्चों के अपने–अपने घर चले जाने के बाद रूचू ने एक बार

फिर सभी गलियों का एक चक्कर लगाया और संभावित खतरे का आकलन किया, उसकी मुस्तैद निगाहें उन मोटर साइकिल सवार युवकों को तलाश रही थी मगर चारों ओर शांति का माहौल देख वो अपनी रात वाली जगह यानि ओवरब्रिज के नीचे रिक्शावाले के पास चला गया।

रिक्शावाला उसी का इंतजार कर रहा था, रूचू भी दौड़ कर उसके पैरों से लिपट गया और अपने प्यार का इजहार किया, उधर लैम्पपोट के नीचे बैठा सांड जुगाली करता हुआ अपनी ही धुन में मस्त था।

आसमान में काली रात का कब्जा हो चुका था, दूर चांद के साथ कुछ सितारे मुस्कुरा रहे थे और खाना खाने के बाद बिहारी रिक्शावाला आसमान की तरफ देख अपनी ही धुन में हमेशा की तरह गाने गुनगुना रहा था।

रात गहरा गयी थी, रिक्शावाला गाते–गाते ही पता नहीं कब नींद की दुनिया में चला गया और झिंगुरों ने अपना गायन हमेशा की तरह शुरू कर दिया। उधर सांड भी आंखें बंद कर सो चुका था मगर जाने क्यों आज रूचू की आंखों में नींद गायब थी।

रूचू को अचानक विचार आया कि कहीं वो मोटर साइकिल सवार चिंटू के घर रात को चोरी

करने के इरादे से दिन में घर की रैकी करने तो नहीं आये। अगले ही पल रूचू बिना कदमों की आवाज किए धीमी गति से रिक्शा के नीचे से निकला और फिर तेजी से रामदीन वाली गली में भागा, उसी गली में चिंटू का मकान था।

गली में कोई आवाजाही नहीं थी, रूचू ने चिंटू के मकान के बाहर का हर इलाका ध्यान से देखा, छत पर भी निगाहें डाली मगर कुछ भी संदिग्ध नहीं दिखा। घर के बाहर चिंटू के पापा की नयी लग्जरी गाडी खड़ी थी, रूचू ने उसका चारों ओर से निरीक्षण किया। सब कुछ सामान्य था तभी रूचू की टीम के सदस्य उसे देख उसकी तरफ आये, वो सभी पास ही बिजली के खम्बे के नीचे सो रहे थे। रूचू ने उन्हें संकेत दिया कि वे तेज आवाज ना करें साथ ही उन्हें किसी चोरी डकैती से सतर्क रहने का इशारा किया। सब कुछ सामान्य पा कर रूचू फिर से रिक्शावाले के पास चला गया।

अगली सुबह नींद से जागते ही रूचू ने एक चक्कर रामदीन की गली का लगाया, सब कुछ ठीक देख वो वापस लौट आया। रिक्शावाला उसकी इस हरकत पर आश्चर्य कर रहा था।

‘बबुआ, आज बिना नाश्ता किए कहॉ भाग गया।‘

रूचू को वापस आता देख रिक्शावाला बोला और फिर उसे बिस्किट और थोड़े पोहे कागज पर रख कर खाने को दिये।

थोड़ी ही देर में सोया हुआ शहर पूरी तरह जाग गया था, सड़क पर कर्कश शोर तेज होने लगा। शहर की जिंदगी हमेशा की तरह अपनी रफ्तार पकड़ रही थी और रूचू भी एक बार फिर अपने इलाके के भ्रमण पर निकल गया।

आज उसने नाश्ते वाले ठेले की तरफ जाने का फैसला किया। ठेले पर हमेशा की तरह काफी भीड़ थी, तभी उसकी निगाहे दूर खड़ी मोटर साइकिल पर गयी। यह वही मोटर साइकिल थी जो कल दिन में चिंटू के घर के बाहर दिखी थी जिस पर बैठ कर दो बदमाश घर के अंदर कुछ देख रहे थे। रूचू की चौकस, सतर्क निगाहों ने ठेले के आसपास की भीड़ को गौर से देखा, कुछ छोटे बच्चे, 3–4 लड़कियॉ, कुछ बड़े आदमी सभी नाश्ता खरीदने में व्यस्त थे और उनमें एक युवक वो भी था जो कल मोटर साइकिल पर था, रूचू तुरंत उसे पहचान गया। मगर उसका साथी उसे दिखायी नहीं दिया, आज वो युवक दूसरी ड्रेस में था। रूचू ने चुपचाप उसकी गतिविधियों पर नजर रखने का फैसला किया।

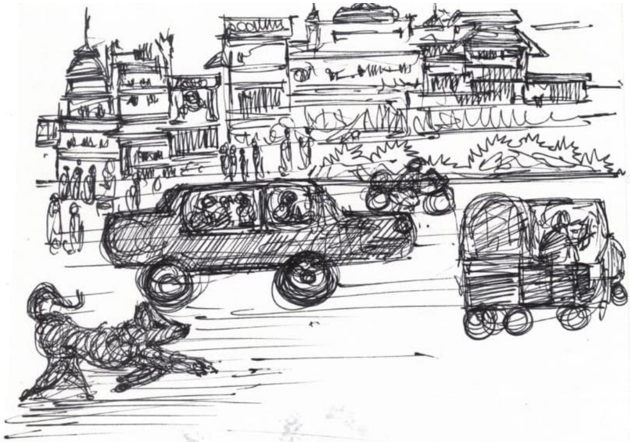

थोड़ी ही देर में वो युवक समोसे की थैली ले कर मोटर साइकिल के करीब आया। अचानक उसकी नजरे भी रूचू से मिली और वो एक पल के लिए घबरा गया मगर तुरंत ही खुद को सहज करके मोटर साइकिल स्टार्ट करके वहां से रवाना हो गया।

रूचू की तेज निगाहों ने भांप लिया कि कुछ तो गड़बड़ है। वो उसके पीछे भागा। मोटर साइकिल मैदान की तरफ भागी जा रही थी, रूचू उसके पीछे इस तरह भाग रहा था कि उसे पता ही ना लगे कोई उसका पीछा कर रहा है।

मैदान के कोने में एक पेड़ की छाया के नीचे एक काले रंग की कार के पास मोटर साइकिल जा कर रूकी, रूचू एक सुरक्षित दूरी बनाए रख कर उन्हें देख रहा था।

मोटर साइकिल सवार ने कार का दरवाजा खोला, रूचू को अंदर 3–4 आदमी बैठे दिखायी दिये। अचानक उसने देखा कि ड्राइवर सीट पर कल वाला दूसरा युवक बैठा हुआ है।

रूचू समझ गया कि ये लोग किसी गहरी साजिश का प्लान बना रहे हैं। शायद कोई चोरी या डकैती का या फिर कुछ और मगर रूचू समझ नहीं पा रहा था कि क्या किया जाये ? वो रामदीन के पास जा कर उसे समझाना चाह रहा था मगर उसने तय किया कि वो खुद ही इन बदमाशों से निपटेगा, मगर समस्या यह थी कि उनके इरादे क्या है पहले यह तो पता लगे।

अगले आधे घंटे तक कार से कोई भी आदमी नीचे नहीं उतरा, रूचू हैरान–परेशान हो कर उनकी गतिविधियों पर नजर रख रहा था। तभी दो और अनजान आदमी पैदल मैदान की तरफ उसी काले रंग की कार के तरफ जाते दिखायी दिये।

रूचू ने अंदाजा लगा लिया कि यह एक 5–7 आदमियों की गैंग है जो आज कोई वारदात करने के इरादे से आयी है। अगले 15 मिनट तक कार से कोई नहीं उतरा, अचानक दो जने नीचे उतरे। ये दोनों वही कल वाले आदमी थे, उन्होंने मोटर साइकिल स्टार्ट की और फर्राटे से रवाना हो गये,

थोड़ी ही देर में कार भी वहां से रवाना हो गयी मगर दोनों अलग–अलग दिशाओं में गये।

रूचू समझ नहीं पा रहा था कि किसका पीछा किया जाये, फिर उसने तुरंत कार का पीछा करने का इरादा किया। तेज गति से कार दौड़ती हुई रामदीन की गली में घुसी, एक पल को चिंटू के घर के बाहर कार धीमी हुई मगर रूकी नहीं फिर तेज गति से रवाना हो गयी।

काले रंग की कार तेजी से गली से निकली और मुख्य सड़क की तरफ घूम गयी। रूचू लगातार उसके पीछे था, वृद्ध विकलांग मोची की सड़क किनारे दुकान तक जा कर रूचू ने कार का पीछा करना बंद कर दिया क्योंकि अब उसकी समझ में आ गया कि ये लोग वारदात के लिए रैकी कर रहे है मगर कब और क्या करेंगे उसको समझ नहीं आ रहा था।

‘अरे रूचू , इधर आ जा मेरा शेर बेटा। ’

वृद्ध विकलांग मोची ने प्यार से रूचू को आवाज दी, मगर आज रूचू अपनी पुरानी ड्यूटी पर था तो उसने उधर ध्यान नहीं दिया और फिर से गली की तरफ जाने का इरादा किया।

वृद्ध मोची रूचू की इस हरकत से हैरान और दुखी था मगर तभी एक ग्राहक के आ जाने से वो अपने काम में लग गया।

रूचू ने रामदीन वाली गली का फिर से ध्यानपूर्वक निरीक्षण किया, उसकी टीम के सदस्य संयोग से वहीं थे। मरियल कुत्ते ने उत्साह से रूचू का स्वागत उसके सामने जमीन पर लेट कर किया।

रूचू ने तय किया कि आज अपनी इस टीम की मदद वो वारदात को रोकने में लेगा। रूचू ने उन्हें समझा दिया कि वो आज गली छोड़ कर ना जाये और मरियल कुत्ते की ड्यूटी तो चिंटू के घर के बाहर ही लगा दी।

गली में इक्का–दुक्का लोगों का आना–जाना था। बच्चे स्कूल जा चुके थे और पुरूष अपने–अपने काम धंधों पर थे, यानि घरों में केवल महिलाएँ और बुजुर्ग थे।

रूचू ने कुछ देर के लिए वृद्ध मोची के पास जाने का फैसला किया।

अगले दो घंटे तक सब कुछ सामान्य था, रूचू ने वृद्ध मोची का दिया खाना खाया साथ ही उसकी निगाहें गली की तरफ भी थी कि कही कार या मोटर साइकिल ना दिख जाये, मगर उसे कुछ भी दिखायी नहीं दिया। उसे लगा कि कहीं उससे गलत–फहमी

तो नहीं हो गयी और उसने शरीफ लोगों को बदमाश समझ लिया हो।

तभी उसे दूर से मोटर साइकिल की आवाज सुनायी दी, उसने आवाज से पहचान लिया कि ये मोटर साइकिल उन्हीं युवकों की है।

वो तुरंत उठ खड़ा हुआ तभी दनदनाती मोटर साइकिल आयी और रामदीन की गली में तेजी से घूम गयी।

रूचू तुरंत उसके पीछे दौड़ा, मोटर–साइकिल बिना रूके गली के दूसरे कोने में एक बिजली के खम्बे के पास रूक गयी, रूचू कुछ समझ नहीं पाया तभी उसके कानों में स्कूल की घंटी की आवाज सुनायी दी।

रूचू ने अपनी टीम के सदस्यों को इशारा कर दिया कि वो तैयार रहे और उसके निर्देशों का पालन करे।

मोटर साइकिल पर सवार युवकों ने मोटर साइकिल बंद नहीं की थी साथ ही उनमें से एक फोन पर किसी से बाते कर रहा था, दूसरा युवक इधर–उधर बेचैनी से देख रहा था और उसके चेहरे की घबराहट रूचू साफ महसूस कर पा रहा था।

थोड़ी ही देर में गली के मुहाने से रौनक, राहुल चिंटू और 2–3 अन्य बच्चों की आवाजें रूचू को सुनायी दी।

रूचू के मन में उत्साह जागा और वो बच्चों के आने का इंतजार करने लगा।

बच्चे गली में हंसते खेलते आ रहे थे तभी पीछे से हॉर्न की आवाज ने रूचू का ध्यान भंग किया।

बच्चों के पीछे वही काले रंग की कार धीमी गति से आ रही थी। बच्चों की गली में आते ही कार भी उनके पीछे गली में दाखिल हो गयी।

रूचू के तेज दिमाग ने तुरंत अंदाजा लगा लिया कि उन बदमाशों का इरादा चोरी या डकैती का नहीं बल्कि चिंटू के अपहरण का है। रूचू ने हल्की भौंकने की आवाज निकाली और अपने टीम के बाकी सदस्यों को अलर्ट कर दिया।

बच्चे स्कूल के किसी टीचर की नकल करके हंस रहे थे। तभी कार रूकी और उसमें से दो आदमी निकले और फुर्ती से बाकी बच्चों को धक्का देते हुए चिंटू को पकड़ने लगे।

अचानक हुई घटना से बच्चे घबरा गए, रूचू तुरंत कार की तरफ दौड़ा तब तक बदमाशों ने चिंटू को गोद में उठा कर गाड़ी में पटक दिया, रूचू ने

एक तेज जंप मारी और सीधा दरवाजे के अंदर घुस गया।

रूचू की पूरी टीम इशारा पा कर जंग के लिए तैयार हो गयी थी। एक कुत्ता मोटर साइकिल सवारों की तरफ लपका, मरियल कुत्ते ने कार के सामने आ कर कार रोकने की कोशिश की मगर तब तक कार चालक ने कार स्टार्ट कर दी और मरियल कुत्ते के ऊपर से कार निकल गयी, मरियल कुत्ता फुर्ती से सड़क के किनारे होने लगा मगर तब तक उसका एक पैर कार के नीचे आ चुका था और वो दर्द से बिलबिला उठा।

कार के अंदर रूचू ने घुसते ही मोर्चा संभाल लिया और चिंटू को पकड़ने वाले आदमी के हाथ पर तेजी से काट डाला। वो आदमी संभलता उससे पहले रूचू ने आगे ड्राइवर पर हमला बोल दिया।

कार के अंदर बैठे बदमाश अचानक हुई घटना से संभल ही नहीं पाये। उधर कार से बाहर सड़क पर खड़े रौनक, राहुल और बाकी बच्चे घबरा कर रोने, चिल्लाने लगे। उनकी आवाज सुन मोहल्ले में अफरा–तफरी मच गयी।

कार गली से बाहर निकलती उससे पहले ही रूचू ने ड्राइवर के सिर पर अपना पंजा जोर से दे मारा और उसका संतुलन बिगड़ गया और कार रामदीन के घर के बाहर एक बिजली के खम्बे से जा टकरायी। तेज आवाज के साथ कार रूक गयी और दरवाजे अपने आप खुल गये।

उधर मोटर साइकिल सवार युवकों को टीम के बाकी सदस्यों ने घेर लिया और उन्हे काटना शुरू कर दिया।

अफरा–तफरी के माहौल में पूरा मोहल्ला सड़क पर निकल आया, संयोग से रामदीन छुट्टी पर था और राहुल की आवाज सुन तुरंत बाहर दौड़ा।

सबसे पहले रामदीन कार के पास गया और बदमाशों को धर दबोचा। तब तक बाकी लोग भी आ गये और जल्दी ही सारे बदमाश मोहल्ले वालों के कब्जे में थे।

रूचू रामदीन को देख पुराने जोश में आ गया, दोनों एक–दूसरे से लिपट गये तभी उषा भी चिंटू की मम्मी के साथ दौड़ी–दौड़ी आ गयी। किसी ने पुलिस को भी बुला लिया था और जल्दी ही सारे बदमाश पुलिस की गिरफ्त में थे।

उषा ने एक निगाह रूचू पर डाली, आज उसकी आंखों में पश्चाताप और प्यार झलक रहा था। डरते–डरते उषा ने रूचू के सिर पर हाथ फेरा तो रूचू के मन से उषा के प्रति सारी नफरत एक पल में ही गायब हो गयी।

रूचू का ध्यान अचानक मरियल कुत्ते की तरफ गया और वो तुरंत रामदीन को लेकर उसके पास गया। रामदीन रूचू का इशारा समझ गया और तुरंत उस मरियल कुत्ते को किसी के साथ जानवरों के अस्पताल इलाज के लिए भेजा।

अगले एक घंटे में रूचू की बहादुरी के किस्से शहर की हवा में फैल चुके थे। शहर के सारे पत्रकार, नेता, अफसर गली में आ चुके थे और आज के हीरो रूचू के साथ फोटो खिंचवा रहे थे।

'नमस्कार भाभीजी।'

भीड़ में से इलाके के पार्षद ने उषा को हाथ जोड़ कर कहा–

'उस दिन आपने बोला था ना कि ये क्या शेर है, तो भाभीजी आज हमारे रूचू ने दिखा दिया कि वो शेर है।'

पार्षद मुस्कुराता हुआ उषा से कह रहा था और उषा चुपचाप सुन रही थी।

'तो भाभी जी आप चिंता ना करे कल से फिर ये 'कुत्ता पकड़ो अभियान' वापस शुरू कर देंगे।'

'खबरदार जो मेरे रूचू या गली के किसी कुत्ते को हाथ लगाया तो। ये हमारे परिवार के सदस्य हैं।'

उषा ने जोश में पार्षद को डांटते हुए कहा और बच्चे खुशी से झूम उठे। रामदीन उषा में आये परिवर्तन से बेहद खुश था।

'अगले सप्ताह दीपावली आ रही है, इस बार हम सब रूचू और उसकी टीम के साथ धूमधाम से दीपावली मनायेंगे।' रामदीन ने खुशी से घोषणा की।

गली में खुशी का माहौल था मरियल कुत्ता भी इलाज के बाद गली में आ गया और मजे की बात यह रही कि उसे लाने वाला आदमी बिहारी रिक्शावाले का रिक्शा किराया कर लाया था।

'अरे बबुआ तू यहां क्या कर रहा है ?'

रूचू को देख बिहारी रिक्शावाला खुशी से बोला।

बच्चों के द्वारा रिक्शावाले को सारा किस्सा सुनने को मिला तो उसने भी अपने साथ घटी रात

वाली घटना रामदीन और बाकी लोगों को बतायी, सभी काफी खुश थे। शोरगुल की आवाज से वृद्ध विकलांग मोची भी वहां किसी से लिफ्ट मांग कर आ गया था।

दीपावली पर नगर पालिका की तरफ से रूचू को सम्मानित करने का प्रस्ताव रखूंगा।' पार्षद उषा की लायी हुई मिठाई खाते हुए बोला।

'क्या बात है हमारा रूचू दिपावली का हीरो होगा।'

राहुल खुशी से झूम उठा।

'इस बार तो पटाखे चलाने का मजा दुगुना हो जायेगा।' चिंटू भी उत्साह से बोला। रूचू के लिए यह पल किसी हिन्दी फिल्म के सुखद क्लाइमैक्स की तरह था, आज उसके संघर्ष का यह दौर समाप्त हो चुका था, रामदीन का साथ वापस पाने के साथ ही उसे अब एक विशाल परिवार मिल चुका था। रिक्शावाला, वृद्ध मोची, बच्चे ये सभी अब उसके जीवन का हिस्सा हो चुके थे साथ ही वो शहर का हीरो बन चुका था, भले ही उसकी सबसे कीमती चीज सूंघने की शक्ति उसके पास ना हो मगर आज उसके पास काफी कुछ था।

खुशी से रूचू फूला नहीं समा रहा था तभी एक पटाखे की आवाज से वो डर गया। रौनक ने दीपावली का आगाज आज से ही कर दिया मगर रूचू के डरने की हरकत देख सभी जोर से हंस पड़े।

‘अरे हमारा हीरो भी डरता है।‘

उषा जोर से खिलखिलायी और रूचू को अपनी गोद में समेट लिया। रूचू के लिए मानो दुनिया थम सी गयी थी।